श्री

नव तत्व प्रकरण मूल

तथा

गुर्जरभाषा बालावबोध.

ए ढ्यांग

स्वबुद्ध्यनुसार लक्षपूर्वक शुद्ध करीने

सर्व

जिनधर्मावलंबी सुजनोने भणवा

तथा

धारण करवाने अर्थें

श्री मुंबापुरीमध्यें

निर्णयसागर प्रेसमां छपाव्युं छे.

संवत् १९३३ माघ शुद्ध ८ सोमवासरे

सन् १८७७.

अनुक्रमणिका.

श्री वीतरागायनमः

अथ

श्रीबालावबोध सहित नवतत्व प्रकरण प्रारंभः

श्रीवीर जिनं नत्वा, मन्वा तद्दिष्टभाव चक्रं च ॥
नवतत्वार्थ विवरणं, कुर्वेहं बालबोधाय ॥ १ ॥

प्रथम नवतत्वना नाम कहेछे.

आर्यावृत्तं.

जीवा जीवा पुन्नं, पावाऽसव संवरो
य निज्जरणा ॥ बंधो मुक्खो य तहा,
नव तत्ता हुंति नायव्वा ॥ १ ॥

अर्थः- व्यवहार नयेंकरी जे शुभाशुभ कर्मो नो कर्त्ता हर्त्ता तथा भोक्ता छे अने निश्चयनयेंकरी ज्ञान दर्शन तथा चारित्ररूप निजगुणोनोज कर्त्ता तथा भोक्ता छे अथवा चेतना सहित हो

य तथा प्राण धारण करे तेने प्रथम जीवा के०
जीव तत्व कहियें; जे चेतना रहित जड स्वनाव
वालो होय तेने बीजुं अजीवा के० अजीव तत्व
कहियें; जेणे करी शुन कर्मना पुजलोनो संचयथ
वाथी सुखनो अनुनव थाय छे तेने त्रीजुं पुन्नं
के० पुण्यतत्व कहिये; जेणे करी अशुन कर्मना
पुजलोनो संचय थवाथी दुःखनो अनुनव थाय
छे तेने चोथुं पावा के० पापतत्व कहिये; जेणे
करी नवा कर्म बंधाय छे तेने पांचमुं आसव के०
आश्रवतत्व कहिये; जेणे करी आवता कर्म रोका
य तेने छठुं संवरो के० संवरतत्व कहिये; जेणेकरी
आत्मप्रदेश मांथी देश थकी कर्म जुदां थाय छे
अथवा पूर्वेकरेला कर्मोनो जे क्षय थाय छे तेने
सातमुं निज्जरणा के० निर्जरातत्व कहिये; जे नवा
कर्मोनुं ग्रहण करीने तेनी साथें जीवनुं बंधन थ
वुं क्षीरनीरनी परे मलिजवुं तेने आठमुं बंधो
के० बंध तत्व कहिये; अने जे आत्म प्रदेश थ
की सर्वथा कर्मोनो क्षय थवुं तेने नवमुं मुरको के०

मोक्षतत्व कहिये. ए नवतत्वरूप वस्तुनुं यथास्थित स्वरूप जे प्रमाणे सिद्धांतोनेविषे कह्युं छे तद्रा के० तेमज सम्यक्दृष्टी जीवोने एनवतत्ता के० नवतत्व ते नायव्वा के० जाणवायोग्य हुंति के० छे. मूळमां बे ठेकाणे यकार वापर्यो छे ते चकार वाचक होवाथी उभयान्वयी अव्यय समजी लेवो, तेथी ए नवतत्वनेविषे सर्व पदार्थोनो समावेस थाय छे अर्थात एथी वधारे तत्व कोई नथी एवी सूचना करी. ॥ १ ॥

ए नवतत्वमाहेला जीव अने अजीव ए बे तत्व मात्र जाणवा योग्य छे. पुण्य संवर निर्ज्जरा अने मोक्ष ए चार तत्व ग्रहणकरवा योग्य छे परंतु एमांनुं पुण्यतत्व व्यवहार नये करी श्रावकने ग्रहण करवा योग्य छे, अने निश्चय नयवडे त्याग करवो योग्य छे, तेमज मुनिने उत्सर्गे त्याग करवा योग्य छे, अने अपवादें ग्रहण करवा योग्य छे तथा पाप आश्रव अने बंध ए त्रण तत्व तो सर्वथा सर्वने त्याग करवाज योग्य छे. उक्तंचः—हेया

बंधाऽसवपा, वा जीवा जीव हुंति विन्नेया ॥
सं र निज्जर मुख्को, पुत्तं हुंति नवाएए ॥ १ ॥
प्रत्येक तत्वना जुदा जुदा नेद कहेठे.

चनदस चनदस बाया, लीसा बासीञ्च
हुंति बायाला ॥ सत्तावन्नं बारस,
चन नव नेञ्चा कमेणेसिं ॥ २ ॥

ञ्चर्थः—प्रथम जीव तत्वना चनदस के० चौद, बीजा ञ्चजीव तत्वना चनदस के० चौद, त्रीजा पुण्यतत्वना बायालीसाके० बेतालीस, चोथा पापतत्वना बासी के० व्याशी, पांचमा ञ्चाश्रवतत्वना बायाला के० बेतालीश, ठग संवर तत्वना सत्तावन्नं के० सतावन, सातमा निर्जरा तत्वना बारस के० बार, ञ्चाठमा बंधतत्वना चन के० चार, ञ्चने नवमा मोक्षतत्वना नव के० नव, एवी रीते कमेणेसिं—ञ्चा क्रमेकरी नेञ्चाके० नेद हुंति के० थायठे.

कहेला नव तत्वना सर्व नेदनी संख्या बशोने ठोत्तेर थाय ठे. तेञ्चोमां ञ्चठ्याशी नेद. ञ्चरू

पी छे, अने एक शो ने अठ्यासी रूपी छे. उक्तंच धम्माऽधम्माऽगासा, तिय तिय अद्धा अजीव -द शगा य; सत्तावन्नं संवर, निजर दुदस मुत्ति नव गाय, ॥१॥ तेमज ॥ अठासि अरूवि हवइ, संप इ नस्मामि जे अरूवीणं; पमाणु देस पएसा, खं ध चउ अजीव रूवीणं ॥ २ ॥ जीवे दस चउ दु चक, बासी बायाल हुंति चत्तारी; सय अठासी रूवी, दूसय छ स्सत्त नव तत्ते ॥३॥ एमां पेली गाथा वडे अठ्यासी नेद अरूपी कह्या, अने पाछली बे गाथावडे एकशो अठ्यासी नेद रूपी कह्याछे.॥२

आ गाथामां जीवनी जातिउ देखाडे छे.

एगविह दुविह तिविहा, चउव्विहा पं
च छव्विहा जीवा ॥ चेयण तस इय
रेहिं, वेय गई करण काएहिं ॥ ३ ॥

अर्थः- प्रथम जीवतत्व विचार कहे छे तेमां आ छ प्रकार जाणवा योग्य छे ते कहे छेः-एग विह-के० एक विध, दुविह के० द्विविध, तिविहा के०

त्रविधा, चउविहा के० चतुर्विधा, पंच के० पांचविध छविहा के० षड्विधा, जीवा के० जीवतत्व छे. तेमां स र्वे जीवने श्रुतज्ञाननो अनंतमो भाग उघाडो र हेवाथी तेउ चेयण के० सचेतन एटले चेतना ल क्षण वान छे माटे एकविध जाणवो. तस के० त्रस एटले जे चलन शक्तिवान होय अने इयरेहिं के० इतर ते बीजा स्थावर एटले जे स्थिरतावान हो य एम सर्वे जीव द्विविध जाणवा वेअ के० वेद त्रण स्त्रीवेद, पुरुषवेद, अने नपुंसकवेद. एम सर्वे जीव त्रिविध जाणवा. गइ के० गति चार देवता, मनुष्य, नारकी, अने तिर्यंच. एम सर्वे जीव चतु र्विध जाणवा. करण के० इंद्रियपांच एकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री, चौरिंद्री, अने पंचिंद्री एम सर्वे जीव पांच विध जाणवा. अने काएहिं के० काय छः—पृथ्वीका य, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पति काय, तथा त्रस काय. एम सर्वे जीव षड्विध जाणवा॥३॥

इहां कोइ आशंका करेके प्रथम नवतत्वोना भेदोनी संख्यामां जीवतत्वना जे चउद भेद क

ह्याछे तेउंमां ए छ जातिनो समावेस थायछे? के
जाति अने भेदनी कांई जुदी व्यवस्था छे? तेनो
उत्तरः–यद्यपिते चउदभेद पण चउद जातिना प
द्धति जुदी होवाथी पहेलां चउदप्रकारनी भेद
एवी संज्ञा करी छे अने आ छ प्रकारनी जाति
एवी संज्ञा कस्यामां आवीछे इति.

जीव तत्वना चउदभेद कहेछे.

एगेंदिय सुहुमियरा, सन्नियर पणिं
दिआ य स बि ति चउ ॥ अपजत्ता
पज्जत्ता, कमेण चउदस जिय ठाणा॥४॥

अर्थः–एगेंदिय के० एकेंद्रियना बे भेद छे, ए
क सुहुमं के० सूक्ष्म, बीजो इयरा के० इतर एटले
बादर. पांचे स्थावरने एकेंद्रिय कहे छे. जे चौद
रज्ज लोकमां व्यापी रह्या छे; पर्वत प्रमुखने भे
दीने जाय आवे; कोई वस्तुथी भेदाय नही ने छे
दाय पण नही; अग्नि जेने बालि शके नही; च
र्मदृष्टिए देखाय नही, मनुष्यादिक कोई प्राणीना

उपयोगमां आवे नही; एवा अदृश्य अने निरति शयि सूक्ष्मनामकर्मोदयवंतने सूक्ष्म कहे छे. जे नियतस्थानवर्त्ती छे, जे कोई वस्तुने नेदी शके न ही; पण जेनो नेद तथा छेद बीजी वस्तुथी थई शके; अग्नि बाळी शके छे; चर्म दृष्टिनो विषय थइ शके; मनुष्यादिक सर्व प्राणीउना उपयोग मां आवे एवा दृश्य अने शातिशयि बादर नाम कर्मोदयवंतने बादर कहे छे. अने पणिंदिआ के० पंचेंड्रियना बे नेद छे. एक सन्नि के० संज्ञि बीजो इयर के० इतर एटले असंज्ञि. श्रोत्र, त्वचा चक्षु, घ्राण, जिव्हा, तथा नेत्र ए पांच इंड्रियो जेने होय तेने पंचेंड्रि कहे छे. जे मन संज्ञा सहित होय तेने संज्ञि कहे छे. जे मन संज्ञारहित होय तेने असंज्ञि कहे छे. एवं ४ तेने स के० सहित करियें बि के० बेंड्रिय, ति के० तेंड्रिय; चउ के० चउरें ड्रिय; ए प्रत्येकनो एक एक नेद कह्यो छे.

एवी रीते एकेंड्रियना बे नेद, बेंड्रियनो एक नेद, तेंड्रियनो एक नेद, चउरिंड्रियनो एक नेद

तथा पंचेंड्रियना बे नेद मळीने सात नेद थया ए साते नेदना जीवो बे प्रकारे होय ठेः– एक अपजत्ता के० अपर्याप्ता तथा बीजा पजत्ताके० पर्याप्ता. जेने जेटली पर्याप्ती कही ठे, ते पूरी कीधी न होय तेने अपर्याप्ता कहे ठे. तथा जेने जेटली पर्याप्ति कही ठे, ते पूरी कीधी होय तेने पर्याप्ता कहे ठे.

पूर्वे कहेला सात नेदना अपर्याप्ता अने पर्याप्ता ए बे प्रकार होवाथी कमेण के० उक्त अनुक्रमे करी चउदस के० चौद जियठाणा के० जीवना स्थान ठे. ए रीते सर्व संसारी जीवोविषे चौद नेद जाणी लेवा. यद्यपि शास्त्रांतरमां जीवना घणा नेद कह्या ठे, ते सर्व उपाधिक ठे. स्वानाविक नेद तो एक चेतना लक्षण ठे मूलमां य–चकार ठे ते उनयान्वयी अव्यय ठे. ॥ ४ ॥

वळी प्रकारांतरे सर्व संसारी जीवना बत्रीश नेद पण थाय ठे. ते कहे ठेः– गाथाः–पण थावर सुहुमियरा, परितवण सन्नि असन्नि विगल

तिगं ॥ इय सोलस पज्जत्ता, अपजत्ता जीव ब त्तीसं ॥ १ ॥ पण थावर सुहुमं के० पांच सूक्ष्म स्थावर; तथा इयरा के० पांच इतर एटले बादर स्थावर ए दशभेद; परितवण के० प्रत्येक वनस्प तिनो अग्यारमो भेद; सन्नि के० संज्ञी पंचेंद्रिय नो बारमो भेद; असन्नि के० असंज्ञी पंचेंद्रिय नो तेरमो भेद; विगलतिगं के० विकल त्रिक ए टले बेंद्रिय तेंद्रिय तथा चउरिंद्रियना त्रण भेद मलीने शोल भेद थायछे. इय सोलस के० ए शो ल भेदोना जीव बे प्रकारना छे, एक पज्जत्ता के० पर्याप्ता; बीजा अपज्जत्ताके० अपर्याप्ता मलीने बतीसं के० बत्रीश भेद थायछे.

शास्त्रांतरमां सर्व संसारी जीवोना पांच शे ने त्रेशठ भेद पण कह्या छे. तेमां मनुष्योना त्रण शे ने त्रण भेद थायछे ते आवीरीतेः— पांच म हाविदेह क्षेत्र, पांच भरत क्षेत्र, तथा पांच ऐ रवत क्षेत्र मलीने पंदर कर्म भूमिक्षेत्र छे. तेम ज त्रीश अकर्मभूमि युगलियाना क्षेत्र छे. अने

छपन अंतर्द्वीप छे. ए सर्व मळीने पर्याप्ताना एक शो ने एक भेद, अपर्याप्ताना एकशोने एक भेद, तथा समुर्छिम अपर्याप्ताना एक शो ने एक भेद मळीने त्रण शो ने त्रण भेद थाय.

देवताओना एकशोने अगणु भेद थाय छे, ते आवी रीतेः– दश भुवनपति; शोळ व्यंतर, पंदर परमाधामी, दश तिर्यग जंभक, पांच चर योतिषी, पांच स्थिर योतिषी, नव लोकांतिक, त्रण किल्विषिया, बार देवलोकना, नव ग्रैवेयकना, तथा पांच अणुत्तर विमानना मळीने नवाणू पर्याप्ता तथा नवाणू अपर्याप्ता गणतां एक शो ने अगणूं भेद थाय.

नारकीना जे सात भेद कह्या छे तेना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ए बे प्रकार करतां चोद भेद थाय.

• तिर्यंचना अडतालीश भेद छे ते आवी रीतेः– पांच सूक्ष्म स्थावर, पांच बादर स्थावर, त्रण विकलेंद्रिय, अने एक प्रत्येक वनस्पति, मळिने चौद पर्याप्ताना तथा चौद अपर्याप्ताना गणतां अ

ठ्यावीश जेद थाय. अने जलचर, थलचर, खेचर, उरपुरीसर्प तथा जुजपुरीसर्प ए पांच समुर्छिम तथा गर्नज मलीने दश थाय; तेना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ए बे प्रकार करतां वीश जेद थाय. तथा पूर्वना अठ्यावीश अने ए वीस मलीने अडतालीश जेद थया.

एवी रीते मनुष्यना त्रण शो ने त्रण जेद, देवताना एक शो ने अठाणु जेद, नारकीना चौद जेद, अने तिर्यंचना अमतालीश जेद ए सर्व मली पांच शो ने त्रेशठ जेद थया.

हवे जीवनुं लक्षण कहे डे.

अनुष्टुप् वृत्तं॥ नाणं च दंसणं चेव,
चरित्तं च तवो तहा॥ वीरियं जवर्ज
गोअ, एअं जीअस्स लक्कणं॥५॥.

अर्थ॥ नाणं के० मति ज्ञान, श्रुतज्ञानं, अवधि ज्ञान, मनपर्यव ज्ञान, तथा केवल ज्ञान, ए पांच सम्यक्त आश्रीने कह्यां डे एनी साथे मती

अज्ञान, श्रुतअज्ञान, तथा विभंग ज्ञान ए त्रण अज्ञान मिथ्यात्वाश्रीछे ते जेतां आठनी संख्या थाय छे. एउमांनुं गमे ते एक के अधिक जेमां होय; चपुनः के० वली दंसणं के० चक्षु, अचक्षु, अवधि, तथा केवल ए चार प्रकारना दर्शनमांनुं गमे ते एक के अधिक जेमां होय; चेव के० निश्चे चरित्तं के० सामायक, छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि, सूक्ष्म संपराय, यथाख्यात, देशविरति, तथा अविरति ए सात प्रकारना हिंसादिक अशुज परिणामथी निवृत्ति तथा व्यवहारथी क्रिया निरोधरूप चारित्रमांनुं गमे ते एक के अधिक जेमां होय; तवो के० तप बे प्रकारनो कह्यो छे. एक द्रव्यथी, एना बार जेद छे. तेनां नाम निर्जरा तत्वमां कहेवाशे. बीजो इच्छा निरोधरूप जावथी. एमांनो गमे ते एक के अधिक जेमां होय; तहा के० तेमज वीरिअं के० करण तथा लब्धिरूप अथवा बल पराक्रमरूप बे प्रकारना वीर्यमानो गमे ते एक अथवा वधारे जेमां होय; उवउगो

के० पांच ज्ञान, त्रण अज्ञान, तथा चार दर्शन ए बार प्रकारना साकार तथा निराकार रूप उपयोगमांनो गमे ते एक अथवा वधारे जेमां होय; तेने संसारी अथवा सिद्ध जीव कहिये. ए गुण जीव विना बीजा कोईमां होय नही. एअं के० ए प्रकारे जीवस्स के० जीवनुं लरकणं के० लक्षण जाणवुं. आ आर्यामां चार चकार छे ते पद पूर्णार्थे तथा उनयान्वयी अव्यय छे. ॥५॥

पर्याप्तानुं वर्णन करतां प्रथम छ पर्याप्तिनुं स्वरूप दर्शावे छेः– आर्यावृत्तं

आहार सरीरेंदिय, पज्जत्ती आण
पाण नासमणे ॥ चउ पंच पंच छप्पि
अ, इग विगला सन्नि सन्नीणं ॥ ६ ॥

अर्थः– पुजलना उपचयथी थयुं जे पुजल परिणमन हेतु शक्ति विशेष, तेने पर्याप्ति कहेछे एना बे नेद छेः– एक लब्धि पर्याप्तिने बीजी करण पर्याप्ति. जे कर्मना उदयथी आरंनेली स्व

योग्य पर्याप्ति सर्व पूरी करी नथी पण करसे तेने लब्धि पर्याप्ति कहे छे. अने जेणे स्वयोग्य पर्याप्ति सर्व पूरी करी लीधी तेने करण पर्याप्ति कहे छे.

अपर्याप्ति पण बे प्रकारनी छेः—एक लब्धि अपर्याप्ति, बीजी करण अपर्याप्ति. आरंभेली स्वयोग्य पर्याप्ति पूरी करे नही, तेने लब्धि अपर्याप्ति कहे छे. अने जे स्वयोग्य पर्याप्ति सर्व पुरी करसे पण हजी कीधी नथी. तेने करण अपर्याप्ति कहे छे.

वैक्रिय शरीरने एक शरीर पर्याप्ति अंतर्मुहुर्त्तनी होय छे ने बाकीनी पांच एक समयनी जाणवी. अने औदारिक शरीरने आहार पर्याप्ति एक समयनी होय छे ने बाकीनी पांच अंतमर्हुर्त्तनी जाणवी. उत्पत्ति समयने विषे ए सर्व पर्याप्ति सर्व जीवो यथायोग्य रीते साथे आरंभे छे, पण पूरी अनुक्रमे करेछे एटलुं विशेष समजवुं.

ते पर्याप्ति छ प्रकारे छे. हरेक जीवने जवांतरनी. उत्पत्ति समये जे शक्तिवडे आहार लईने

तेने रसपणे परिणमाववानी जे शक्तिविशेष तेने आहार के० आहार पर्याप्ति कहे छे. पछी ते रसरूप परिणामने रस, रुधिर, मांस, मेद, अस्थि मज्जा, तथा वीर्य ए सात धातपणे परिणमावीने शरीर बांधवानी जे शक्ति विशेष तेने शरीर के० शरीर पर्याप्ति कहे छे. पछी ते सातधातपणे परणमाव्यो जे रसते जेने जेटला द्रव्य इंद्रिय जोये तेने तेटला इंद्रियपणे परिणमाववानी जे शक्तिविशेष तेने इंद्रिय के० इंद्रिय पर्याप्ति कहे छे. पज्जत्ति के० पर्याप्ति ए शब्द सर्वनी साथे जोडवो. केमके, कहेली त्रण पर्याप्ति पुरी कर्याविना कोई जीव मरण पामे नही माटे पर्याप्ति शब्द वचमां कह्यो छे ए त्रण पर्याप्ति बांधीने पछी श्वाशोश्वाश योग्य वर्गणाना दलिक लई, श्वासऊसासपणे परिणमावीने अवलंबी मूकवानी जे शक्ति विशेष तेने आणपाणके० श्वाशोछ्वाश पर्याप्ति कहे छे. भाषायोग्य पुद्गल लई, भाषापणे परिणमाविने अवलंबी मूकवानी जे शक्ति विशेष तेने भासके० भाषा पर्याप्ति क

हे छे. अने मनोवर्गणायोग्य पुजल लई, मनप णे परिणमावीने अवलंबी मूकवानी जे शक्ति वि शेष तेने मणेके० मन पर्याप्ति कहेछे एवी रीते छ प्रकारे पर्याप्ति कही छे.

आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इंद्रिय पर्याप्ति, तथा श्वासोश्वास पर्याप्ति ए चउके० चार पर्याप्ति इगके० एकेंद्रियने होय. कहेली चार पर्या प्तिओनी साथे पांचमी नाषा पर्याप्ति जोडीने पं चके० पांच विगलाके० प्रत्येक विकलेंद्रिय एट ले बेंद्रिय, तेंद्रिय तथा चउरेंद्रियने होय. ए ज पंचके० पांच पर्याप्तिओ असन्नीके० असंज्ञी पंचेंद्रियने होय. अने छप्पियके० छ ए पर्याप्ति ओ सन्नीणंके० संज्ञीपंचेंद्रीयने होय. ॥ ६ ॥

प्रसंगे प्राप्त थएला पांच इंद्रिओना त्रेवीश विषय कहे छेः– हलवो नारी सुहालो खर खरो लूखो चोपडयो ताढो ऊनो ए आठविषय स्पर्शेंद्रिज, जाणे पण बीजी चार इंद्रियो न जाणे तीखो कडुवो कषायलो खाटो मीठो ए

पांच विषय रसेंद्रिज जाणे. बीजी चार इंद्रि
यो न जाणे सुरभिगंध दुरभिगंध ए बे विषय
घ्राणेंद्रिज जाणे बीजी इंद्रियो न जाणे का
लो नीलो रातो पीलो धोलो ए पांच विषय च
क्षुइंद्रिज जाणे बीजी चार इंद्रियो न जाणे
जीव शब्द अजीव शब्द मिश्र शब्द ए त्रणवि
षय श्रोतेंद्रिज जाणे बीजी इंद्रियो न जाणे
ए पांचे इंद्रियोना विषय एकठा करतां त्रेंवी
स थाय तेनो जाणपणो मनसहित जीव ते जे
इंद्रियमां चले ते इंद्रि पोताना विषयने जाणे
पण जीवना व्यापारविना इंद्रियो सर्व जडरूप
छे माटे विषयने न जाणे.

दश प्राणनुं वर्णन करे छेः—

पणिंदिअ त्तिबलू सा,साऊ दस पा
ण चउ छ सग अठ ॥ इग दु ति चउ
रिंदीणं, असन्नि सन्नीण नव दसय ॥७॥

अर्थ.— स्पर्शनेंद्रिय, रसेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षु

रिंड्रिय, तथा श्रोत्रेंड्रिय ए पणिंदिअके० पांच इंड्रिय, मनोबल, वचनबल, तथा कायबल, ए तिबलके० त्रणबल ; ऊसासके० श्वासोश्वास ; अनें आऊके० आयुष्य एटले जे जीवने नवनी साथे नियत बंधक होयते एदस पाणके० प्राणजाणवा.

कया कया जीवने केटला केटला प्राण होय ते कहेछेः–पृथव्यादि पांच स्थावररूप इगके० एकेंड्रिय ने स्पर्शनेंड्रिय, श्वासोश्वास, कायबल तथा आउखो ए चउके० चार प्राण होय. दक्षिणावर्त्त शंख प्रमुख डुके० बेंड्रियने ऊपर कहेला चार प्राणनी साथे रसनेंड्रिय तथा वचन बल जोडवाथी छके० छप्राण होय. कानखजुरीआ, माकण, जू, कीडी तथा मकोडा प्रमुख तिके० तेंड्रियने ऊपर कहेला छ प्राणनी साथे घ्राणेंड्रिय जोडवाथी सगके० सात प्राण होय वीछी तथा भ्रमरिआदिक चउरिंदीणंके० चतुरिंड्रियने ऊपर कहेला सात प्राणनी साथें चक्षुरिंड्रिय जोड्याथी अठके० आठ प्राण होय.

मातापिताना संयोग विना एटले गर्भविना मनुष्यना मल मूत्रादि चउद स्थान के उपजनारा जें संमूर्छिम मनुष्य तथा कादव प्रमुखनेविषे उपजनारा जेसमूर्छिम तिर्यंच एवा असन्नि के० असंज्ञि समूर्छिम पंचेंद्रियने ऊपर कहेला आठ प्राणनी साथें श्रोत्रेंद्रिय जोड्याथी नवके० नव प्राण होय. एमां आटलुं विशेष समजवानुं छे के, समुर्छिम बे प्रकारना होय छे एक समुर्छिम मनुष्य अने बीजा समुर्छिम तिर्यंच तेउमां समुर्छिम तिर्यंच ने तो कहेला नव प्राण होय छे. एवो नियम छे. पण समुर्छिम मनुष्यने वचनबल नही होवाने लीधे आठज प्राण होय छे. तेमां पण जो श्वासोछ्वास पर्याप्ति बांधतो छतां मरण पामे तो सातज प्राण रहे छे. अने जे मातापिताना संयोगेकरी गर्भने विषे उत्पन्न थाय छे एवा मनुष्य तथा तिर्यंच जे गर्भज जातिना होय तथा नारकी अने देवता उत्पाद सिझामां ने कुंभीमां उपजे छे पण मातापिताना संयोगे गर्भमां

उपजता नथी तोपण देवता अने नारकी ने संज्ञी पंचेंद्रिय कहिये एवा सन्नीणं के० संज्ञि पंचेंद्रियने ऊपर कहेला नव प्राणनी साथे मनोबल जोडवाथी दश प्राण होय छे. ॥ ७ ॥

इति श्री जीवतत्व वर्णन समाप्त.

हवे अजीवतत्वनुं वर्णन करतां प्रथम अजीव तत्वना चौद भेद कहे छेः—

धम्मा ऽधम्मा ऽगासा, तिय तिय भे
या तहेव अद्धाय ॥ खंधा देस पए
सा, परमाणु अजीव चउदसहा ॥ ८ ॥

अर्थः— धम्माके० धर्मास्तिकाय, अधम्माके० अधर्मास्तिकाय, आगासाके० आकाशास्तिकाय ए त्रणं द्रव्यनो खंध, देश तथा प्रदेश एवा तिय तिय भेयाके० त्रण त्रण भेद होवाथी प्रत्येक अस्तिकायने त्रणे गुणतां नवनी संख्या थाय छे

प्रदेशना समूहने अस्तिकाय कहे छे. एवो अ
र्थ कहेला त्रणे द्रव्योने लागु करवो. ए त्रणे द्र
व्योनो चौद रज्जवात्मक खंध कहेवाय छे. तेथी कां
इक उंछो होय तेने देश कहिये अने जे अविभाज्य
होय ते प्रदेश कहेवाय छे. तहेवके० तेमज अ
द्धाके० काल द्रव्यनो वर्त्तमान समयरूप एकज
प्रदेश होवाथी ते अस्तिकाय कहेवाय नही. मा
टे एकज भेद जाणवुं एम दशभेद थया. य—च
कार उभयान्वयी अव्यय छे. एथी पुजलास्तिका
य द्रव्य लेवुं तेना अखंड द्रव्यरूप आखा पदा
र्थने अथवा अनंतादि परमाणुना मलेला समू
हने खंधाके० खंध कहे छे. खंधनो केटलोएक
भाग जेनो खंधनी साथे संबंध होय तेने दे
सके० देश कहे छे. जेनी खंधनी साथे निर्विभा
ज्य कल्पना करी छता खंधनी साथे अभिन्न सं
बंध होय तेने पएसाके० प्रदेश कहेछे. अने ते
ज प्रदेशजो खंधथी भिन्न थाय एवो निर्विभाज्य
भाग एटले जेना केवलीनी बुद्धिये एक भागना

बे ज्ञाग थई शके नही तेने परमाणु के० परमा णु कहे छे. ए रीते ए पुजलास्तिकाय द्रव्यना चार ज्ञेद ते पूर्वोक्त दशज्ञेदो साथे मेलवतां अजीवके० अजीव तत्वना चउदसहा के० चौद ज्ञेद थाय. ७॥

अजीव तत्वना पांच मूल ज्ञेद, तथा तेनां लक्षण बे गाथा ए करी कहेछेः—

धम्माऽधम्मा पुग्गल, नह कालो
पंच हुंति अज्जीवा ॥ चलण सहावो
धम्मो, थिरसंठाणो अहम्मोअ ॥९॥
अवगाहो आगासं, पुग्गल जीवाण
पुग्गला चउहा ॥ खंधा देस पएसा
परमाणुं चेव नायव्वा ॥ १० ॥

अर्थः—धम्माके० धर्मास्तिकाय, अधम्माके० अधर्मास्तिकाय, पुग्गलके० पुजलास्तिकाय नह के० आकाशास्तिकाय. अने कालोके० काल ए पांच अज्जीवाके० अजीवद्रव्य हुंतिके० छे. ए पांच नी साथे जीवद्रव्य ज्ञेल्याथी षड्द्रव्य कहेवाय छे.

जेम मत्स्यना संचारनुं अपेक्षा कारण पाणीछे तेम जीवने तथा पुद्गलने गतिपणे परिणमतां जे अपेक्षा कारण होय तेने धर्मास्तिकाय कहे छे. जेम जलविना मत्स्यनो संचार थइ शके नही. तेम धर्मास्तिकाय विना जीव अने पुद्गल चाली शके नही. अर्थात् चलणसहावो धम्मो के० चलण स्वभावगुण ते धर्मास्तिकाय जाणवो.

जेम पंथीने वीशामुं लेवानेविषे वृक्षादिकनीछाया अपेक्षा कारण छे, तेम जीव तथा पुद्गलने स्थितिपणे परिणमतां जे अपेक्षा कारण होय अर्थात् जे थिरसंठाणो अहम्मो के० स्थिर राखवानो सहज गुण तेने अधर्मास्तिकाय कहे छे. ए बन्ने अरूपी द्रव्य चउदराज लोक व्यापी छे वर्ण गंध शब्द रूप स्पर्श तथा रस रहीत असंख्यात प्रदेशी छे जे उदासीन वृत्ति होय तेने अपेक्षा कारण कहेछे य–चकारपद पूर्णार्थे उभयान्वयी अव्यय छे.॥ए॥

जे लोकालोक व्यापी शब्दरूप रस गंध तथा स्पर्श रहीत अरूपी अनंत प्रदेशी अने शाकरने

दूधनी परे जे अवगाहोके० अवकाश स्वनाव गुण ते आगासंके० आकाशास्तिकाय कहिये. अर्थात् एक प्रदेशथी बीजा प्रदेशमां जतां जे अवकाशने आपे तेने आकाश इव्य कहिये तेना बे नेद छे. एक लोकाकाश बीजो अलोकाकाश ए विशेष ता छे. आंही कोइ अशंका करे के अवकाश कोने आपे छे? तेनुं उत्तर ए छे के पुग्गल जी वाणके० पुजल तथा जीवने अवकाश आपे छे. ते पुग्गलके० पुजल इव्य चउहाके० चार प्रका रे छे. पूर्वोक्तस्वरूप पुजल इव्यना खंधाके० खंध, देसके० देश, पएसाके० प्रदेश तथा परमाणुंके० परमाणु ए नेद चेव के० निश्चये करीने नायवा के० बुद्धिवंतने जाणवा योग्य छे. ॥ १० ॥

पुजल इव्यनुं उपाधिक लक्षण कहे छेः—

अनुष्टुप् वृत्तं ॥ सद्दं धयार उज्जोअ पन्ना छाया तवेहि आ॥ वन्न गंध रसा फासा, पुग्गलाणं तु लरकणं ॥ ११॥

अर्थः- सचित, अचित अने मिश्र ए त्रण प्रकारमांना गमे ते प्रकारनो सद्दंके० शब्द, अंध यारके० अंधकार, रत्न प्रमुखनो उज्जोअके० प्र काश, चंद्रमा प्रमुखनी पत्नाके० ज्योति, गया के० गायरु, अने तवेहिके० सूर्य प्रमुखनो आ तप आके० वा, एटले बीजा आ पदार्थ पण जाणवाः-वन्नके० वर्ण, गंधके० गंध, रसाके० रस, फासाके० फरस. एवा गुणवालो होय, अने जे चौ द राज लोकमां व्यापक, संख्यात प्रदेशी, असंख्या त प्रदेशी तथा अनंत प्रदेशीनो, पूर्ण, गलन स्वना ववान एवो अखंम पुजलास्तिकायरूप खंध, ते खंध नो एक नाग अथवा कांइ पण न्यून नागरूप देश, तथा जे केवलीनी बुद्धिये पण एक नागना बे नाग थइ शके नही एवो अति सूक्ष्म खंधनो अनिन्न नाग निर्विनाज्यरूप ते प्रदेश, तेनजेज ज्यारे खंधथी निन्न कल्पना थाय त्यारें ते पर माणु कहेवाय छे. ए पुग्गलाणंके० पुजलोनुं तु के० निश्चयपणे लरकणंके० लक्षण छे. ॥ ११ ॥

काल द्रव्यना भेद दर्शावेछे आर्यावृत्तं ॥

एगाकोडि सतसठि, लरका सत्तहुत्त
री सहस्सा य ॥ दोयसया सोलहि
या, आवलिआ इग मुहुत्तम्मि॥१२॥

अर्थः– एगा कोडिके० एक क्रोड, सतसठि लरकाके० सडसठ लाख, सत्तहुत्तरी सहस्साके० शितोतेर हजार, दोयसयाके० बशें अने सोलहियाके० शोल उपर एटली आवालिआके० आवलिका इग मुहुत्तंमिके० एक मुहूर्त्तमां थाय छे. यके० चकार पद पूर्णार्थे उनयान्वयी अव्ययछे. एनो नावार्थः– वस्त्र अथवा पत्र फाडवाना आरंनमां सूक्ष्मात् सूक्ष्म क्षणरूप जे काल होय छे. जेनो विनाग थइ शके नही. जेना नूत अने नविष्य विषे विचार थाय नही. एटले वस्त्र अथवा पत्र फाडंतां प्रथम वर्त्तमान कालरूप अति सूक्ष्म कालनुं उल्लंघन थइने ते क्यारे नूत काल थयो, क्यो वर्त्तमान काल छे, अने क्यो नविष्य

काल थवा योग्य छे तेनो अनुमान पण थइ श
के नही तेने सर्व लघुकालरूप समय कहे छे. ए
वा असंख्यात समयने आवली कहे छे. एवी ब
शेंने छपन आवलीए एक क्षुल्लक भव थाय छे. ए
करतां बीजा कोइ पण नांना भवनी कल्पना थ
इ शके नही. एवा सत्तर अथवा कांइक अधिक क्षु
ल्लक भवमां एक श्वासोश्वासरूप प्राणनी उत्पत्ति
होय छे. एवा सात प्राणोत्पत्ति कालने एक स्तो
क कहे छे. एवा सात स्तोक समये एक लव हो
य छे. एवा शित्तोतेर लवे बे घडीरूप एक मुहूर्त्त
होय छे. ते एक मुहूर्त्तनेविषे १६७७७२१६ आ
वली होय छे. ॥ १२ ॥

व्यवहार, कालना प्रकार कहे छे.

समयावली मुहुत्ता, दीहा पक्का य
मास वरिसा य ॥ भणिउ पलिआ
सागर, उसप्पिणी सप्पिणी कालो॥१३॥

अर्थः— अतिसूक्ष्मकालने समय के०. समय

कहेछे असंख्याता समयने एक आवलीके० आ
वलीकहेछे एवी १६७७७२१६ आवलीयें मुहु
र्त्ताके० एक मुहुर्त्त थायछे त्रीसमुहुर्त्तें दीहाके०
एक अहोरात्रीरूप दिवशकहेछे पंदर आहोरात्री
ने परकाके० परववाडचुंकहेछे बे परववामीये मा
सके० एक महीनो थाय छे बार महीने वरिसा
के० एक वर्ष थायछे ए रीते नणिउके० कह्युं छे
तेमज पलिआके० पल्योपम तेवा दशकोमाकोडी
पल्योपमे सागरके० सागरोपम तेवा दशकोमाको
डी सागरोपमे ऊसप्पिणीके० ऊत्सर्प्पिणी अने बी
जा दशकोमा कोडी सागरोपमे सप्पिणीके० अव
सर्प्पिणी थाय ए बे मलीने वीस कोडा कोडी सा
गरोपमे कालोके० एक कालचक्र थाय एवा अ
नंता कालचक्रे एक पुजल परावर्त्तथाय ए सर्व
मनुष्यलोकमां व्यवहारथी काल जाणवो.॥१३॥

आ॰गाथामां बे ठेकाणे चकारछे ते पदपूर्णा
र्थे उनयान्वयी छे. एनो नावार्थः—पूर्वोक्त जे का
लना .नेद कह्या तेथीवली बीजा कालना नेद

घणाछे ते पण जाणीलेवा. जेम के बे मासे एक ऋतु थायछे त्रण ऋतुये एक अयन बे अयने एक वर्ष पांच वर्षे एक युग चोरासी लाख वर्षे एकपूर्वांग ते एक पूर्वांगने चोरासी लाखे गुणता एक पूर्व थायछे इत्यादिक कालना अनेक भेदछे ते बीजा शास्त्रोथी जाणवा ॥ १३ ॥

षडद्रव्यनुं कांइक विशेष देखाडे छेः–

परिणामि जीव मुत्तं, सपएसाएग
खित्त किरिआय॥ णिच्चं कारणकत्ता
सव्वगद इयर अप्पवेसे ॥ १४ ॥

अर्थः– छ द्रव्यमां जीव अने पुद्गल ए बे द्रव्य परिणामि के० परिणामि छे बाकीना चार द्रव्य अपरिणामि छे इहां परिणामनो भाव जाणवो परंतु स्वभावे परिणामि तो छ द्रव्य छे छ द्रव्यमां एक जीवद्रव्य जीव के० जीव छे अने बाकी पांच द्रव्य अजीव छे छ द्रव्यमां एक पुद्गलद्रव्य मुत्तं के० मूर्त्तिवंत रूपीछे बाकीना पांच

द्रव्य अमूर्त्तिवंत अरूपी छे छ द्रव्यमां पांचद्रव्य सपएसा के० सप्रदेशी छे अने एक कालद्रव्य अप्रदेशी छे छ द्रव्यमां धर्म अधर्म ने आकाश ए त्रण द्रव्य एग के० एक छे बीजा त्रण द्रव्य अनेकछे छ द्रव्यमां एक आकाश खित्त के० क्षेत्र छे बीजा पांचद्रव्य क्षेत्री छे छ द्रव्यमां जीव अने पुद्गल ए बे द्रव्य किरिआ य के० सक्रियछे बाकीना चार अक्रिय छे छ द्रव्यमां धर्म अधर्म आकाश ने जीव ए चार द्रव्य निच्चं के० नित्य छे बे अनित्य छे यद्यपि उत्पाद व्यय अने ध्रौवपणे सर्व पदार्थ परिणमे छे तथापि धर्मादिक चार द्रव्य सदा अवस्थित माटे नित्य कह्या, छ द्रव्यमां धंर्मादि पांचद्रव्य कारणके० कारण छे एक जीव अकारण रूप छे छ द्रव्यमां एक जीव कत्ताके०कर्त्ताछे बीजा पांच अकर्त्ताछे छ द्रव्यमां एक आकाश सव्वग के०सर्वगत छे अने इयरके० बीजा पांच द्रव्य मात्र लोकव्यापी छे माटे असर्वगत जाणवा यद्यपि छ द्रव्य क्षीरनीरपरें परस्पर अवगा

ढछे तथापि अपवेसे के० प्रवेश रहीत छे स
गसग नावनविजहंति ए वचन माटे ॥ १४ ॥
इति श्री अजीवतत्व विचार समाप्त.

पुण्यतत्वनुं वर्णन करतां पुण्य नव प्रकारे बं
धाय छे ने बेतालीसप्रकारे नोगवायछे ते कहे छे.

सा उच्च गोअ मणु डुग, सुरडुग पं
चेंदिजाइ पणदेहा ॥ आइ ति तणूणु
वंगा, आइम संघयण संठाणा ॥१५॥

अर्थः- साधु प्रमुखने पहेलो अन्न दीधाथी
बीजो पाणी दीधाथी, त्रीजो रहेवानेस्थानदेवाथी
चोथो सूवाने पाट प्रमुख दीधाथी, पांचमो पहेर
वा अथवा ओढवाने वस्त्र दीधाथी, छगो तेवि
षे मने करी शुन संकल्प कस्याथी, सातमो वचने
करी स्तुत्यादि कस्याथी, आठमो कायाए करी सेवा
कस्याथी, तथा नवमो हाथे करी नमस्कारादिक
कस्याथी ए नव प्रकारे पुण्य बंधाय छे. तेने बेता
लीश प्रकारे जीव नोगवे ते कहे छेः-

१ जेना उदये जीव सुखनो अनुभव करे अथवा शाताने पामे तेने साके० सातवेदनीय कहियें, २ जेना उदये जीव उच्च गोत्र एटले उच्च कुलमां जन्म धारण करीने लोकने विषे पूजा प्रतिष्ठादिकने पामे, तेने उच्चगोअके० उच्च गोत्र कहिये. जेना उदये ३ मनुष्यनी गति तथा ४ मनुष्यनी आनुपूर्विनी प्राप्ति थाय छे तेने मणुडुगके० मनुष्यद्विक कहिये. जेना उदये ५ देवनी गति, तथा ६ देवनी आनु पूर्वि ने पमाय छे, वक्र गतिए परभवमां जतां बल दने नाथ घालीने शीधो चलाववानी पठे जेथी उपजवाने स्थानके पहोची शकाय तेने आनु पूर्वी कहे छे. ए सुरडुगके० सुरद्विकरूप नामकर्म कहियें ७ जेना उदये पंचेंड्रियपणुं प्राप्त थाय छे, तेने पंचेंदिय जाइके० पंचेंड्रिय जाति नाम कर्म कहिये. जेना उदये पांच शरीरनी प्राप्ति थाय छे ते कहे छेः— ८ जेथी औदारिक शरीर यो ग्य पुद्गल ग्रहण करीने तथा ते शरीर पणे परि

णमावीने जीव पोताना प्रदेशनी साथे मेळवे ते
ने औदारिक नाम कर्म कहे छे. एवी रीते सर्व
शरीरनेविषे योजना करवी. ए वैक्रिय शरीरना
बे भेद छे, एक उपपातिक ते देवता तथा नार
कीने होय छे. बीजो लब्धि प्रत्ययीओ ते तिर्यंच
तथा मनुष्य लब्धिवंतने होय छे, १० आहारक
शरीर ते चौद पूर्वधर मुनिराज तीर्थंकरनी ऋद्धि
प्रमुख जोवाने अर्थे एक हाथ प्रमाण देह धारण
करेछे. ११ तेजस शरीर ते आहारनुं पचन करनार
तथा तेजो लेश्यानो हेतु. १२ अने कार्मण शरीर
ते कर्मना परमाणु आत्म प्रदेशनी साथे मळ्या छे ते
ज जाणवो ए पणदेहाके० पंच शरीररूप नामकर्म
कहिये. जेना उदयथी कहेला पांच शरीरमांना आ
इके० आदिना औदारिक, वैक्रिय तथा आहार
क ए तितणुके० त्रण शरीरना बे बाहु, बे ऊरु,
एक पिष्टिका, एक मस्तक, एक उदर तथा एक
हृदय ए आठ अंग छे अंगुली प्रमुख.उपांग छे,
तथा रेषादिक अंगोपांग छे. एटले १३ औ

दारिक अंगोपांग १४ वैक्रिय अंगोपांग १५ आ
हारक अंगोपांग अने तेजस शरीर तथा कार्म
ण शरीर ए बे ने अंगोपांग नथी तेथी पहेला त्र
ण शरीरना कह्या छे तेने उवंग के० अंग, उपां
ग, तथा अंगोपांगरूप नामकर्म कहिये. १६ जेना
उदयथी छ संघयणामांनो आद्म के० पहेलो वज्र
रुषभ नाराच नामनो संघयण प्राप्त थाय छे. वज्र
एटले खीली, रुषभ एटले पाटो, तथा नाराच
एटले बे पासा मर्कटबंध एटले मरकटबंध ते
उपर पाटो ते उपरे खीली एवो हाडनो निचय
एटले समुदाय होय तेने संघयण के० अस्थि
निचय संघयणरूप कहिये. १७ जेना उदयथी,
पोते पर्यंकाशन करी बेठा छतां समचतुरस्त्र चा
रे बाजु सरखी आकृति थाय, ने पोताना आं
गुल प्रमाणवडे एकशोने आठ आंगुल प्रमाण
शरीर जणाय तेने उत्तम पुरुष कहे छे, एनी प्रा
प्ति थाय छे तेने संठाण के० छसंस्थान मांनुं प
हेलुं समचतुरस्त्र संस्थान कहिये. ॥ १५ ॥

वन्न चउक्काऽगुरु लहु, परघा ऊसा
स आयवुज्जोअं॥सुभखगइ निमिण
तस दस, सुर नर तिरिआउ तित्थयरं॥

अर्थः— जेना उदयथी १७ श्वेत, रक्त, अने पीतरूप शुभ वर्ण; १८ एक सुरभि गंध रूपशुभ गंध; २० आंबिल, मधुर, अने कसायलोरूप शुभ रस; तथा २१ लघु, मृदु, उष्ण, अने स्निग्धरूप शुभ स्पर्श ए चार पदार्थ पुण्य प्रकृतिने अर्थे प्रशस्त जाणवा; एओनी प्राप्ति थाय छे; तेने वन्न चउक्काके० वर्ण चतुष्करूप कहिये.

२२ जेना उदयथी मध्यम वजनदार शरीरनी प्राप्ति थाय, एटले लोहनी पठे अति भारी पण नही ने आकडाना कपाशनी पठे अति हलको पण नही किंतु मध्यम परिणामी होय तेने अगुरुलहुके० अगुरु लघुनाम कर्म कहिये.

२३ जेना उदयथी बीजा बलवानने अति दुःसहनीय छतां पोते गमे तेवा बलीआने जी

तवाने समर्थ थाय छे, एवा बलनी प्राप्ति थाय छे, तेने परघाके० पराघात नाम कर्म कहिये..

२४ जेना उदयथी सुख पूर्वक श्वासोश्वास लइ शकाय, कोइ पण विघ्न पडे नही तेने उसास के० श्वासोश्वा नाम कर्म कहिये.

२५ जेना उदयथी सूर्यना बिंबनी पठे परने ताप उत्पन्न करवाना हेतुरूप तेजयुक्त शरीरनी प्राप्ति थाय छे, ते आयवके० आतप नाम कर्म.

२६ जेना उदयथी चंद्र बिंबनी पठे शीतल ताने उत्पन्न करवानुं हेतुरूप तेजयुक्त शरीरनी प्राप्ति थाय. ते उज्जोअके० ते उद्योत नाम कर्म.

२७ जेना उदयथी वृषभतथा हंसनी पठे सारी चलन शक्तिनी प्राप्ति थाय छे तेने सुभख गइके० शुभविहायोगति नाम कर्म कहिये.

२८ जेना उदयथी सूत्रधारनी पठे पोताना अंगना सर्व अवयव योग्य स्थलनेविषे गोठववानी शक्ति प्राप्त थाय छे, तेने निमिण के० निर्माण नाम कर्म कहिये.

३८ जेना उदयथी त्रस दशको आदिदइ दश प्रकृति जे आगल कहेवासे तेनी प्राप्ति थाय छे तेने तसदस के० त्रस दसक नाम कर्म कहिये.

३९ जेना उदयथी देवताना आयुष्यनी प्राप्ति थाय छे, तेने सुराउके० सुरायुष्यरूप कहिये.

४० जेना उदयथी मनुष्यना आयुष्यनी प्राप्ति थाय छे, तेने नराउके० नरायुष्यरूप कहिये

४१ जेना उदयथी तिर्यंचना आयुष्यनीप्राप्ति थाय छे, ते तिरिआउके० तिर्यंचायुष्यरूप कहिये.

४२ जेना उदयथी त्रिभुवनने पूज्यपणुं प्राप्त थायछे, तेने तिछयरं के० तीर्थंकर नाम कर्म कहिये ए कर्मनो उदय मात्र केवलीनेज थाय छे.

पूर्वोक्त त्रस दशको कहे छेः–

तस बायर पज्जत्तं, पत्तेअ थिरं सु
भं च सुभगं च ॥ सुस्सर आइज्ज ज
सं, तसाइदसगं इमं होइ ॥ १७ ॥

अर्थः– १ जेना उदयथी जीवने बेंडियना

शरीरनी प्राप्ति थाय; अर्थात एकइंद्रियनो शरीर पामे नही तेने तसके० त्रसनाम कर्म कहिये. .

२ जेना उदयथीबादर शरीरनी प्राप्ति थाय पण जे दृष्टियेकरी देखाय नही एवा सूक्ष्म शरीरने न पामे तेने बायरके० बादर नाम कर्म कहिये.

३ जेना उदयथी आपआपणी पर्याप्ति पूरी करे ते पर्याप्ति बे प्रकारे छे एक लब्धि, बीजी करण. तेने पज्जतंके० पर्याप्ति नाम कर्म कहिये.

४ जेना उदयथी औदारिक अथवा वैक्रिय प्रमुख भिन्न भिन्न शरीरनी प्राप्ति थाय, पण घणा जीवोवच्चे एक शरीर न पामे, तेने पत्तेअ के० प्रत्यैक नाम कर्म कहिये.

५ जेना उदयथी शरीरना दंतादिक अव यवोनी स्थिरतानी प्राप्ति थाय छे, तेने थिरंके० स्थिर नाम कर्म कहियें.

६ जेना उदयथी शरीरना सर्व अवयव सारा होय अथवा नाभीना उपरनो शरीर सारो होय तेने सुभं के० शुभ नाम कर्म कहिये.

७ जेना उदयथी सर्व लोकने प्रिय थाय, तेने सुजगं के० सौजाग्य नाम कर्म कहिये.

८ जेना उदयथी वाणीमां कोकिलानी परे मधुरता थाय, तेने सुस्सरके० सुस्वरनाम कर्म कहिये.

ए जेना उदयथी लोकनेविषे माननीक वचन थाय, ते आइज्जके० आदेयनाम कर्म कहिये.

१० जेना उदयथी लोकनेविषे यश कीर्त्ति थाय, तेने जस के० यशनाम कर्म कहिये.

एवीरीते तसदसगं के० त्रसआदि दश प्रकृतिनो दशको इमं के० ए पुण्यना जेदमां होइ के० डे. ते पूर्वोक्त बत्रीसमां जेलीए तेवारे बेतालीस थाय ए पुण्य तत्वना बेतालीस जेद कह्या.॥१७॥

इति श्री पुण्य तत्व विचार समाप्तः

पापतत्वनुं वर्णन करता अढार प्रकारे पापं बंधाय अने व्यासीप्रकारे जोगवाय ते कहे डेः—

नाणंतराय दसगं, नव बीए नीअ

साय मिछत्तं ॥ थावर दस निरय
तिगं, कसाय पणवीस तिरिय डुगं १८.

अर्थः– प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोन, राग, द्वेष, कलह, अन्याख्यान, पैशून्य, रति अरति, परिपरिवाद, मायामोसो, तथा मिथ्यात्व शल्य, ए अढार प्रकारे पाप बंधाय छे तेब्यासी प्रकारे जोगवाय छे ते कहे छेः–

१ जेना उदयथी पांच इंद्रिय तथा मनो द्वाराए जे नियत वस्तुनुं ज्ञान थाय छे, एवा प्रथम मतिज्ञाननुं जे आछादन थाय, तेने मति ज्ञानावरणीय पाप कर्म कहियें.

२ जेना उदयथी अक्षरानुसारे जे ज्ञान थाय छे, एवा श्रुतज्ञाननुं आछादन थाय तेने श्रुतज्ञानावरणीय पापकर्म कहिये.

३ जेना उदयथी इंद्रियादिकनी अपेक्षा विना आत्मद्रव्यनुं जे साक्षात् ज्ञान थाय छे,

एवा अवधिज्ञाननुं जे आछादन थाय तेने अव धि ज्ञानावरणीय पापकर्म कहिये.

४ जेना उदयथी संज्ञी पंचेंद्रियना मनो गत नावनुं जे ज्ञान थाय छे, एवा मनपर्यव ज्ञाननुं जे आछादन थाय छे तेने मनपर्यव ज्ञा नावरणीय पापकर्म कहिये.

५ जेना उदयथी पूर्वोक्त चार ज्ञानरहित जे एक निरावरण ज्ञान होय एवा केवलज्ञाननुं जे आछादन थाय तेने केवलज्ञानावरणी पापकर्म क हिये. एवीरीते पांच प्रकारना ज्ञानने जे आछाद न करे तेने नाणके० ज्ञानावरणी पापकर्म कहिये.

६ जेना उदयथी, पोताना घरमां देवायोग्य वस्तु छतां, तथा दाननुं फल जाणता छतां पण आपी शकाय नही तेदानांतराय पाप कर्मकहिये.

७ जेना उदयथी, दातार छतां दातारना घर मां वस्तु छतां मागनार माह्यो छतां पण'जे या चित वस्तुनी प्राप्ति न थाय, तेने लाजांतराय पाप कर्म कहिये.

ए जेना उदयथी पोते यौवन छतां, सुरू प छतां तथा जोगोपजोग वस्तुनी प्राप्ति थई छ तां पण ते जोगवाई न शकाय, तेने जोगांतराय तथा उपजोगांतराय ए बे पापकर्म कहिये. (पुष्पा दिपदार्थ जे एक वार जोगवाय छे, तेने ७ जोग कहे छे, अने वस्त्रादिक पदार्थ जे वारंवार जोगवाय छे, तेने ए उपजोग कहियें छे.)

१० जेना उदयथी पोते यौवन, रोगरहित, तथा बलवान छतां पण जेथी पोतानी शक्ति फोरवाई शकाय नही, ते वीर्यांतराय पाप कर्म

एवी रीते पांच प्रकारे जे आडुं आवे तेने अंतराय के० अंतराय नामनुं पाप कर्म कहिये. पहेला पांच तथा ए पांच मलीने दसग के० दश प्रकार थया. हवे नवबीए के० बीजा नव प्रकार दर्शनावरणीय कर्मना जाणवा. तेमां चार जेद दर्शनमा, तथा पांच जेद निद्राना कहे छे. (सामान्य उपयोगने दर्शन कहे छे.)

११ जेना उदयथी, आंखेकरी जे रूपनुं सा

मान्य पणे ग्रहणथाय एवा चक्षु दर्शननुं आछा दन थाय, तेने चक्षु दर्शनावरणी पापकर्मकहिये.

१२ जेना उदयथी, चक्षुविना चार इंद्रिय तथा मनेकरी पोतपोताना विषयनुं जे सामान्यपणे ग्रहण थाय एवा अचक्षु दर्शननुं जे आछा दन थाय, तेअचक्षु दर्शनावरणी पापकर्मकहिये.

१३ जेना उदयथी, सामान्यपणे जेरूपी द्रव्यनुं मर्यादापणे ग्रहण थाय छे, एवा अवधि दर्शननुं जे आछादन थाय तेने अवधि दर्शनावरणी पाप कर्म कहिये.

१४ जेना उदयथी, समस्त वस्तुनुं जे सामान्यपणे देखवुंथाय छे, एवा केवलदर्शननुं जे आछादन थाय, ते केवल दर्शनावरणी पापकर्म

१५ जेना उदयथी निद्रावस्था थई गया. पछी सुखपूर्वक जागृदावस्थानी प्राप्ति थाय, तेने निद्रा रूप पाप कर्म कहिये.

१६ जेना उदयथी निद्रावस्था थई गया

पछी दुःखपूर्वक जागृदावस्थानी प्राप्ति थाय, तेने निद्रानिद्रारूप पाप कर्म कहिये.

१७ जेना उदयथी बेसतां तथा ऊनतां निद्रा आव्या करे तेने प्रचलारूप पाप कर्म कहियें.

१८ जेना उदयथी हरतां फरतां निद्रा आवे, तेने प्रचला प्रचलारूप पाप कर्म कहिये

१९ जेना उदयथी दिवसनुं चिंतवेलुं कार्य रात्रिनेविषे निद्रासमये जागृत्नी परे थाय छे तेने थीणद्धीरूप पाप कर्म कहिये. (थीणद्धी निद्राना समये प्राणी वासुदेवना अर्द्धबल युक्त छे ने ते जीव नरकगामी जाणवो.)

२० जेना उदयथी पोते रूपवान, तथा, धनवान छतां नीच कुलनेविषे उत्पन्न थाय तेने नीय के० नीचैर्गोत्ररूप पापकर्म कहिये. (ए नीच गोत्ररूप पापकर्म निंदापात्र छे)

२१ जेना उदयथी दुःखनो अनुभव थाय, ते असाय के० अशाता वेदनीय पापकर्म

२२ जेना उदयथी वीतरागना वचननी

विपरीत सद्दहणा थाय, तेने मिछत्तं के० मिथ्यात्व मोहनीय पाप कर्म कहिये.

३४ जेना उदयथी स्थावरदशकनी प्राप्ति थाय तेने थावरदस के० थावरदस नामनुं पापकर्म ते आगल कहेवाशे माटे अत्रे नाममात्र दर्शाव्युं छे.

३५ जेना उदयथी नरकनी गति, नरकनी आनु पूर्वी, तथा नरकनो आउखो प्राप्त थाय तेने नरयतिगं के० नरक त्रिक पाप कर्म कहिये.

पचीश कषायरूप पाप कर्मना पचीश प्रकार छे, तेउमां एक शोल कषायने बीजा नव नोकषाय एवा बे प्रकार छे. तेउनुं अनुक्रमे वर्णनकरेछे

३ए जेना उदयथी अनंत संसार बंधाय तेने अनंतानुबंधी पाप कर्म कहिये. एना क्रोध, मान, माया, ने लोज ए चार नेद छे. ए जावज्जीव लगि कायम रहे, सम्यकत्व आववा न दिये, अने अंते नरकनेविषे पहोचाडे, ए क्रोध पर्वतनी लीटी जेवो छे, मान पाषाणना थांज

ला जेवो छे, माया वंशना मूल जेवी छे, ने लो
भ कृमिना रंग जेवो छे.

४२ जेना उदयथी थोडा प्रत्याख्याननी पण प्राप्ति न थाय, तेने अप्रत्याख्यानीय पाप कर्म कहिये. एना क्रोध, मान, माया, ने लोभ ए चार भेद छे. ए एक वर्ष सुधी कायम रहे छे देश विरति पण आववा दिए नही, ने अंते तिर्यंचनी गतिनी प्राप्ति करावे. ए क्रोध सुकेला तलानीरेषा जेवो छे, मान हाडकांना थांभला जेवुं माया मेंढाना सिंगडाना जेवी तथा लोभ कर्दमनारंगना जेवोछे

४७ जेना उदयथी सर्व विरतिरूप प्रत्याख्याननें आछादन थाय, तेने प्रत्याख्यानीय पाप कर्म कहिये. एना क्रोध, मान, माया, ने लोभ ए-चार भेद छे. ए चार मास सुधी कायम रहे सर्व विरतिरूप चारित्रनो घात करे, तथा अंते मनुष्यनी गतिनी प्राप्ति करावे छे. ए क्रोध रेतनी रेषा जेवो छे, मान काष्टना थांभला जेवुं छे, मा

या वृषजना मूत्रनी रेषा जेवी ठे, अने लोज
काजलना रंग जेवो ठे.

५१ जेना उदयथी चारित्र धारण करनारुं
थोडुंक दीपे, तेने संज्वलन पाप कर्म कहि
ये. एना पण क्रोध, मान, माया, ने लोज ए
चार जेद ठे. ए पंदर दिवश शुधी कायम रहेठे
यथाख्यात चारित्रने आवरण करे, अने देव ग
तिनी प्राप्ति करावे ठे. ए क्रोध पाणीनी रेषा जे
वो ठे, मान नेतरनाथांजला जेवुं ठे; माया वं
शनी गेल जेवी ठे अने लोज हलदरना रंगजेवोठे

एवी रीते चार चार जेदे चार कषाय कहेतां
शोल कषायनुं वर्णन कर्युं हवे नव नोकषाय कहे
ठे जे कषायने सहचारी होय ते नोकषाय कहिये.

५७ जेना उदयथी एक वस्तुनिमित्ते तथा बी
जी परनिमित्ते ए बे प्रकारथी हास्य, रति, अरति,
शोक, जय, तथा डुगंठानी उत्पत्ति थाय तेने
हास्य षट्क रूप पाप कर्म कहिये. एवं ५७

५८ जेना उदयथी स्त्री जोगववानी इछा

थाय, तेने पुरुष वेद रूप पाप कर्म कहिये? एने (त्रणनी अग्निनी उपमा छे. ५७ जेना उदय थी पुरुष जोगववानी इच्छा थाय तेने स्त्रीवेदरूप पाप कर्म कहिये; एने धुणी नी अग्निनी उपमा छे. ६० जेना उदयथी स्त्री तथा पुरुष ए बन्नेनी अभिलाषा थाय तेने नपुंसक वेदरूप पाप कर्म कहिये (एने नगर दाहनी उपमा छे)

६१ जेना उदयथी तिर्यंचनी गती तथा तर्यंचनी आनुपूर्वीनी प्राप्ति थाय, तेने तिरिय डुगं के० तिर्यंचद्विक नामकर्म कहिये. ॥ १८ ॥

इग बिति चउ जाईओ, कुखगइ उ
वघाय हुंति पावस्स॥ अपसत्थं वस्र
चऊ, अपढम संघयण संठाणा ॥१ए॥

अर्थः— ६३ जेना उदयथी पृथ्वी कायादिक पांच थावरनी जातिना शरीरनी प्राप्ति थाय, तेने इग के० एकेंद्रिय जातिरूप पापकर्म कहिये.

६४. जेना उदयथी शंख प्रमुख जीवोनी

जातिना शरीरनी प्राप्ति थाय छे. तेने बि के० बेंद्रियनीजातिरूप पापकर्म कहिये.

६५ जेना उदयथी यू माकणादिक जातिना शरीरनी प्राप्ति थाय छे, तेने ति के० तेंद्रियनी जातिरूप पाप कर्म कहिये.

६६ जेना उदयथी वृश्चिकादिक जातिना शरीरनी प्राप्ति थाय छे, तेने चउजाईउ के० चतुरिंद्रियनी जाति रूप पापकर्म कहिये.

६७ जेना उदयथी उंट अथवा गधेडानीपठे नरशी चालवानी गतिनी प्राप्ति थाय छे, तेने कुखगइ के० अशुभविहायोगति नामकर्म कहिये.

६८ जेना उदयथी पोताना जीभ चोरी दांत हरस रसोली प्रमुख अवयवे करी पोतेज हणाय छे, तेने उवघाय के० उपघात नामकर्म कहिये.

७१ जेना उदयथी चार अशुभ वर्णादिक एटले कालो रंग अने नीलो रंग, ए बे अशुभ वर्ण, डुरभिगंध, तेअशुभगंध तीखो रस,ने कटुक रस, ए बे अशुभरस गुरु खर शीत तथा लूखो

ए चार अशुन फरस ए सर्व मलीने नव अशुन थाय पण सामान्ये चार गणियें एओनी प्राप्ति थाय छे तेने अपसत्थंवसचउके० अप्रशस्त वर्ण चतुष्कनामे पापकर्म कहिये.

७७ जेना उदयथी छ संघयणमांना प्रथम संघयणविना पांच संघयणनी प्राप्ति थाय छे जेना बे पासामर्कटबंध उपर पाटो ए बे होय पण वज्रते खीलो न होय तेने रुषजनाराच कहेछे; जेने केवल मर्कट बंधज होय पण पाटो तथा खीली न होय तेने नाराच कहे छे; जे एक पासे मर्कट बंध होय तेने अर्द्ध नाराच कहेछे; ज्यां माहोमांहे हाडकांने एकखीलीनो बंध होय तेने कीलिका कहे छे; अने जे खीलीविना माहोमाहें अमस्ता अडकी रह्या होय तेने छेवठो कहे छे. ए पांच संघयणनी प्राप्ति थायछे तेने अपढमसंघयण नामकर्म कहिये.

७८ जेना उदयथी छ संस्थानमांना पहेला संस्थानविना बीजा पांचनी प्राप्ति थाय छे.

(जे वट वृक्षनी परें नाभिनी उपर सुलक्ष णयुक्त, तथा नाभिनी नीचे निर्लक्षणयुक्त होय तेने न्यग्रोध परिमंमल संस्थान कहेछे; जे ना भिनी नीचेनो अंग सारो अने नाभिनी उपरनो अंग नरसो होय तेने सादि संस्थान कहे छे; जे उदर प्रमुख लक्षणोपेत अने हाथ, पग, माथुं कोटि प्रमाणरहित होय तेने वामन संस्थान कहे छे; जे हाथ पग माथुं कोटि प्रमुख प्रमाणोपेत अ ने उदर प्रमुख हीन होय तेने कुब्ज संस्थान कहे छे; जे सर्व अवयव अशुन होय तेने हुंमक सं स्थान कहे छे. ए पांच संस्थाननी प्राप्ति तेने अ पढमसंगाए के० अप्रथम संस्थानरूप नामकर्म कहिये. एवीरीते सर्व मलीने पावस्स के० पापत त्वना व्याशी प्रकार ते हुंति के० छे. ॥ १ए ॥

हवे स्थावर दशक कहे छेः—

थावर सुहुम अपज्जं, साहारण म
थिर मसुन्न दुन्नगाणि॥ दुस्सर णा
इज्ज जसं, थावर दसगं विवज्जत्थं॥२०॥

अर्थः—जेना उदयथी स्थावरपणुं प्राप्त थाय, तेथी तापादिकेपीडाय, पण खशी शकाय नही, तेने प्रथम थावर के० स्थावर नाम कर्म कहिये; जेना उदये सर्व लोक व्यापक, अने दृष्टिने अ गोचर एवुं सूक्ष्मपणुं प्राप्त थाय तेपण पृथव्या दिक पांचज जाणवा तेने बीजो सुहुम के० सू क्ष्म नाम कर्म कहिये. जेना उदयथी स्वयोग्य पर्याप्ति पूरी कर्याविनाज मरण पामे तेने त्रीजो अपज्जं के० अपर्याप्तनाम कर्म कहिये. जेना उ दयथी अनंत जीव वच्चे एक औदारिक शरीरनी प्राप्ति थाय, एवी निगोदावस्थाने चोथो साहारणं के० साधारण नाम कर्म कहियें. जेना उदयथी शरीरमां दंतादिक अवयव अस्थिर थाय, तेने पांचमो अथिरं के० अस्थिरनाम कर्म कहिये. जेना उदयथी नाभिनी नीचेनो अंगभाग सारो न होय; तेने छठो असुभ के० अशुभनाम कर्म कहिये. जेना उदयथी सर्व लोकने अणखाम णो लागे तेनेसातमो दुभग के० दुर्भाग्य नाम

कर्म कहिये. जेना उदयथी काकादिकनी पठे कानने कटुक लागे एवा स्वरनी प्राप्ति थाय ठे, तेने आठमो डुस्सर के० डुस्वर नाम कर्म कहिये. जेना उदयथी लोकनेविषे तेनो बोलवुं कोइ मान्य करे नही तेने नवमो अणाइज्ज के० अनादेय नाम कर्म कहिये. जेना उदयथी लोकमां अपकीर्त्ति थाय, पण कोइ यश बोले नही तेने दसमो अजसं के० अयश नाम कर्म कहिये.

एवी रीते कह्युं जे थावरदसगं के० स्थावर दशक, ते पुण्य तत्वमां कहेला त्रस दशकथी विवज्जबं के० विपरीत जाणी लेवुं. ॥ २० ॥

इति पापतत्व विचार समाप्त.

आश्रवतत्व बेतालीस प्रकारे कहे ठेः—

इंदिअ कसाय अव्वय, जोगा पंच
चउ पंच तिन्नि कमा॥ किरिआउ प
णवीसं, इमाउ ताउ अणुक्कमसो ॥२१॥

अर्थः– जेम जेमार्गे करी तलावमां पाणी आवे छे तेने नालुं कहिये तेम जेणेकरी आत्मा नेविषे कर्मोनो आववुं थाय छे तेने आश्रव कहिये ते श्रोत चक्षु नासिका जिव्हा तथा स्पर्शन ए पंचके० पांच इंद्रिय के० इंद्रियो छे क्रोध मान माया ने लोभ ए चउ के० चार कसाय के० कषाय छे प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन अने परिग्रह ए पंच के० पांच अव्वय के० अव्रत छे मनोयोग वचनयोग तथा काययोग ए तिन्नि के० त्रण जोगा के० योग छे ए कमा के० अनुक्रमे सत्तर भेद थया अने किरिआउ के० क्रियाउ पणवीसं के० पचीस इमाउ के० आगल कहेसे ताउ के० ते अणुक्कमसो के० अनुक्रमे करी बेतालीस भेद जाणवा ॥ २१ ॥

पचीश क्रियाउ कहे छेः–

काइअ अहिगरणीआ, पाउसिआ
पारितावणी किरिआ ॥ पाणाइवाइ
रंभिअ, परिग्गहिआ मायवत्तीआ॥२२

अर्थः– कायाने अजयणाए प्रवर्त्तावतां जेक्रिया लागे ते पहेली काइआ के० कायकी क्रिया. खडगादिक अधिकरणे करी जे जीवोनुं हनन थाय ते बीजी अहिगरणीआ के० अधिकरणकी क्रिया. जीव तथा अजीव उपर द्वेषनी चिंतवना करवी ते त्रीजी पाउसिया के० प्रद्वेषिकी क्रिया. पोताने तथा परने जे परिताप उपजाववो ते चोथी पारितावणी के० पारितापनकी क्रिया. एकेंद्रियादिक जीवने हणवुं तथा जे हणाववुं ते पांचमी पाणाइवाय के० प्राणातिपातकी क्रिया. करशण प्रमुखनी जे उत्पत्ति करवी अथवा करावावी ते छठी रंभिअ के० आरंभिकी क्रिया. धन धान्यादिक नवविध परिग्रह मेलवता तथा तेनी उपर मोह करता लागे ते सातमी परिग्गहिया के० पारिग्रहिकी क्रिया. मायाए करी जे बीजाने ठगवुं ते आठमी मायवत्तीय के० मायाप्रत्ययिकी क्रिया. मूलमां जे किरिआ शब्द छे ते उक्त प्रकारे सर्वने जोडवो. ॥ २२ ॥

मिच्छा दंसणवत्ती, अप्पच्चख्खाणा दि
ठि पुठीअ ॥ पाडुच्चिअ सामंतो
वणीअ नेसच्छि साहच्छि ॥ २३ ॥

अर्थः—जिनवचन अणसद्दहतो थको जे विप
रीत प्ररूपणा करताक्रिया लागे ते नवमी मिच्छादं
सणवत्ती के० मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी क्रिया. अ
विरतिएकरी पच्चख्खाण कीधा विना सर्व वस्तुनी
क्रिया लागे ते दशमी अप्पच्चख्खाणा के० अप्रत्या
ख्यानकी क्रिया. कौतुके करी अश्व प्रमुखने जोवुं
ते अग्यारमी दिठि के० दृष्टिकी क्रिया. रागना वशें
करीने जे पुरुष स्त्री गाय बलद वस्त्र प्रमुख सुकु
माल वस्तुने स्पर्श करवुं तेथी जे क्रिया लागे
अथवा कोई संदेह उत्पन्न थयाथी पूछवुं तेथीजे
क्रिया लागे ते बारमी पुठिअ के० पृष्टिकी अथवा
पृच्छिकी क्रिया. जीव तथा अजीव आसरी जे रा
गद्वेष थाय छे एटले बीजाना घेर हस्ति घोडा व
स्त्रभूषण प्रमुख देखी द्वेषधरे जे ए वस्तु, एनी

पासे केम एवुं चिंतवी कर्म बंध करे ते तेरमी पाडुच्चिअ के० प्रतीत्यकी क्रिया. पोताना अश्व प्रमुखने जोवामाटे आवेला लोकोने प्रशंसा करता जोईने जे हर्ष करवो; अथवा दुध दधि घृत तेल प्रमुखनुं नाजन ऊघाडुं मूक्याथी तेमां जे त्रस जीव आवी पडे ते चौदमी सामंतोवणीअ के० सामंतोपनिपातिकी क्रिया राजादिकोना आदेश थकी यंत्र शस्त्रादिकनो जे आकर्षण करवुं अथवा शस्त्र घडावे वाव्य कुवानु खनन करावे ते पंदरमी निसत्थके० नैशस्त्रिकी क्रिया. पोतानाहाथे अथवा श्वानादिक जीवथी तथा शस्त्रादिक अजीवथी जे शशकादिकजीवने मारवुं ते सोलमी साहत्थि के० स्वहस्तिकी क्रिया. ॥ २३ ॥

आणवणि विआरणिआ, अणनोगा अणवकंख पच्चइआ ॥ अन्नापउग समुदा, ण पिज्ज दोसेरिआवहिआ २४

अर्थः– जीव तथा अजीवने कांइ आज्ञा क

रवी, अथवा तेउनी मारफते कांइ अणाववुं. तेथी
जे क्रिया लागे ते सत्तरमि आणवणी के० आज्ञा
पनिकी क्रिया. जीव तथा अजीवनो जे विदारण
करवुं ते अडारमी विआरणिआ के० विदारणिकी
क्रिया. उपयोग विना शून्य चित्ते करी कांइ वस्तु
लेवी अथवा मूकवी तथा उठवुं बेसवुं गमनादिक
करवुं ते उंगणीशमी अणजोगा के० अणाजोगिकी
क्रिया. आ लोक तथा परलोकथी जे विरुद्ध का
र्यनो आचरण करवुं ते वीशमो अणवकंखप
त्तइआ के० अनवकांक्ष प्रत्ययिकी क्रिया. अन्ना
के० अपरा. बीजी. मन वचन तथा कायाना
योगनुं जे दुःप्रणिध्यान तेमां प्रवर्त्तन करवुं पण
निवृत्तवुंनही ते एकवीसमी पउग के० प्रायोगि
की क्रिया. केटलीक प्रतोमां ए क्रियाने अन्नाप
उगके० अनाउपयोगकी क्रिया एम लख्युं छे ते
केटलीकरीते समीचीन नथी. एवो महोटो पा
प करे के जेथकी आठे कर्मनो समुदाय पणे ग्र
हण थइ जाय ते बावीशमी समुदाण के० समु

दायिकी क्रिया. माया तथा लोभवडे जे कांई कवुं एटले प्रेमना वचन एवा बोले के जे थकी रागनी अधिक वृद्धि थाय ते त्रेवीशमी पिज्ज के० प्रेमकी क्रिया. क्रोध तथा मानवडे एवा गर्वित वचन बोले के जेथकी आगलाने द्वेष उपजे ते चोवीसमी दोसेके० द्वेषिकीक्रिया. अने केवल काययोगनुं जे प्रवर्त्तावबुं तेणेकरी जे क्रिया लागे ते पचीशमी इरिआवहिया के० इर्यापथिकी क्रिया कहिये. ए इरिया पथिकी क्रिया अप्रमत्त साधुने तथा केवलीने पण होय ॥ २४ ॥ ए पचीस क्रियाउ कही तेपूर्वे कहेला सत्तर भेदो साथे मेलवंता आश्रवतत्वना बेतालीस भेदथाय.

इति आश्रवतत्व समाप्तः

संवर तत्वना सत्तावन भेद कहे छेः—

समिई गुत्ति परीसह, जइ धम्मो भावणा चरित्ताणि॥पण ति छवीस दस बार,स पंच भेएहि सगवन्ना ॥ २५ ॥

अर्थः— जेणे करी नवां कर्मो आवतां रोकाय तेने संवर कहे छे, तेना बे भेद छे. एक द्रव्य संवर बीजो भावसंवर नवां कर्मोनुं जे रोकाववुं, तेने द्रव्यसंवर कहिये. अने समिति प्रमुखपणे परिणामने पाम्युं जे शुद्ध उपयोगरूप द्रव्यपणु, तेथी भावकर्मना रोधक आत्माना परिणाम थाय छे तेने भाव संवर कहिये. सम्यक् प्रकारे जे चेष्टा करवी तेने समिई के० समिति कहिये ते पणके० पांच छे. योगनुं जे गोपन करवुं तेने गुत्ति के० गुप्ति कहिये ते ति के० त्रण छे. सर्व प्रकारे निर्जराने अर्थे जे सहन करवुं तेने परीसह के० परिसह कहिये. ते दुवीस के० बावीश छे. यतिने जे अवश्य आचरवा योग्य होय तेने जइधम्म के० यतिधर्म कहिये. ते दसके० दश छे. मननी चंचलता निवारण करवाशारु जे भाववुं तेने भावणा के० भावना कहिये ते बारस के० बार छे. कर्मक्षय थवाने अर्थे अहिंसादिक परिणामे करी जे यत्नादिकनुं आचर

खुं तेने चरित्ताणि के० चारित्र कहिये. ते पंच के० पांच छे. एवी रीते सगवन्ना के० सतावन नेएहि के० नेदेकरी संवर तत्व जाणिये. ॥२५॥

पांच समिति तथा त्रण गुप्ति कहे छेः—

अनुष्टुप् वृत्तं ॥ इय्या नासेसणा
दाणे, उच्चारे समिई सुश्र ॥ मणगु
त्ति वयगुत्ति, कायगुत्तितहेवय॥२६॥

अर्थः— गाथाना पूर्वार्धे करी पांच समितिनुं वर्णन करे छे. समिति के० सम्यक् चेष्टा. तेमां जयणा राखीने उपयोग सहित जे चालवानी चेष्टा करवी तेने पहेली इय्या के० इरिश्रा समिति कहिये. सम्यक् प्रकारे निर्वद्य नाषा बोलवा रूप जे चेष्टा करवी तेने बीजी नासे के० नाषा समिति कहिये. सम्यक् प्रकारे बेतालीश दोष रहित निर्दोष आहार, वस्त्र, पात्र वसति संबंधी निक्षानी गवेषणा करवी तेनी चेष्टा तेने त्रीजी एसणा के० एषणासमिति कहिये. सम्यक् प्रका

रे जीमसेननी पठे पोंजी प्रमार्जी आसन प्रमुख
नुं आदान एटले ग्रहण करवानी जे चेष्टा करवी
अने निक्षेप एटले त्याग करवानी चेष्टा करवी
आदान शब्दथी निक्षेपनुं पण अर्थात् ग्रहण था
य छे तेने चोथी दाणे के० आदान निक्षेपणा
समिति कहिये. अने परठवा योग्य जे मल मू
त्रादिक वस्तु, तथा सदोष उपकरणादिकनुं स्थं
मिल जूमिकाने विषे उपयोग पूर्वक जे मूकवा
नी चेष्टा करवी तेने पांचमी उच्चारे के० परिष्टा
पनिका समिति कहिये. एवी रीते पांच समिईसु
अक० समिति कही. गाथाना उत्तरार्ध वडे त्रण
गुप्तिनुं वर्णन करे छेः—प्रथम मणगुत्ति के० मन
गुप्ति एटले मननुं गोपन करवुं तेना त्रण जेद
छेः— तेमां अपध्याने करी उत्पन्न थएला कल्प
ना जालनो जे वियोग ते पहेलो जेद. धर्म ध्या
ने करी मध्यस्थपणानी जे परिणति ते बीजो जे
द. अने सर्वथा मनो योग रोकायाथी तेरमां गु
ण गणाना अंतनेविषे जे आत्मारामता थाय

छे ते त्रीजो भेद जाणवो. बीजी वयगुत्ति के० वचन गुप्ति एटले वचननुं गोपन करवुं. तेना बे भेद छेः– सर्वथा वचननो रोध करवाने अर्थे मौननो अभिग्रह धारण करीने हाथ प्रमुखनी संज्ञावडे कार्य करवो ते पहेलो भेद. अने मौननो अभिग्रह धारण नही कर्यो छतां याचना प्रमुख कार्य करती वेलाए मुखे मुहपती देइने जे जयणाथी बोलवुं ते बीजो भेद, जाणवो. अने भाषा समितिमां तो केवल जयणायें बोलवानुंज कह्युं छे अने एमां तो जुदा जुदा बे स्वरूप देखाडयां छे ए उपरथी वचन गुप्ति अने भाषा समिति एउमां अंतर छे एम जाणवुं. अने तहेव के० तेमज त्रीजी कायगुत्ति के० कायगुप्ति एटले कायानुं गोपन करवुं. तेना पण बे भेद छेः– उपसर्ग परिसह आवी उत्पन्न थया थी पण जे काया स्थिर राखवी अथवा योग निरोधावस्थाए सर्वथा शरीरनी चेष्टानो त्याग करवो ते पहेलो भेद. अने शयन, आसन प्रमुख

नेविषे सूत्रोक्त विधिए करी नियमथी चेष्टा करवी एटले माथा तले हाथ घाली, गूंटण संकोची, कुकडीनी पठे पगपसारीने सूवुं. इत्यादिक बीजो नेद जाणवो. समिति अने गुप्तिना अर्थमां आ टलो फेरठे. सम्यक् प्रकारे चेष्टारूप प्रवृत्ति करवी ए समितिनुं लक्षणठे. अने शुन स्थाननेविषे प्रवृत्ति करवी तथा अशुन स्थानथी निवर्त्तन थवुं एम प्रवृत्ति तथा निवृत्तिरूप गुप्तिनुं लक्षण ठे. २६

बावीस परीसहनुं वर्णन करे ठेः–

खुहा पिवासा सी उण्हं, दंसा चेला रइ ठिउ ॥ चरिआ निसिआ सिज्जा अक्कोस वह जायणा ॥ २७ ॥

अर्थः– अतिशय नूख लागी ठतां निरवद्य आहारना अलानथी क्षुधा सहन करे पण सावद्याहारनी जे इछा करवी नही ते पहेलुं खुहा के० क्षुधा परिसह. अतिशय तरस लागी ठतां पण सचित पाणीनी जे इछा करवी नही ते

बीजुं पिवासाके० पिपासा परिसह. कायोत्सर्गे तथा वेहारादि करतां अतिशय ताढ पडती हो य तो पण अग्नीप्रमुखने सेववानी जे इछा करवी नही ते त्रीजुं सी के० शीत परिसह. अतिशय ताप लागतो होय तो पण स्नान वायु गायडाप्र मुखनी जे इछा करवी नही आ तापनादि कष्ट सहनकरवी ते चोथुं उएहं के० उष्ण परिसह. कायोत्सर्गादिकनेविषे दंस मसक, बगतरा, तथा जुं प्रमुखना दंशथी जे व्याकुल थाय नही ते पांच मुं दंसके० दंशपरिसह. पोतानीपाशे प्रमाणोपेत वस्त्र जो मेलां थई गयां होय, अथवा जीर्ण थई ग या होय तो पण जे बीजा नवां वस्त्रनी इछा करवी नही ते छठुं चेला के० अचेल परिसह. संयमने विषे अमनोज्ञ उपाश्रय तथा अहारादिकनेविषे अरति उपजाववी नही. ते सातमुं अरइ के० अरति परिसह. स्त्रीनो मनोहररूप विभूषा विलास वाक्य हावभावादिक देखीने हृदयमां जे क्षोभन करवुं ते आठमुं छिउके० स्त्रीपरिसह. वायुनीपरे अप्रति

बंध विहार कार्य करवो पण एकत्रवास करवुं नही ते नवमुं चरिआ के० चर्यापरीसह. स्मशान शुन्यागार सर्प बिल्न सिंह गुफादिकनेषे कायोत्सर्गे रह्या थका नाना प्रकारना उपसर्गेना स आवे पण अशिष्ट चेष्टा करवी नही एटले खेद तथा नयनें पामवुं नही ते दशमुं निसीआ के० नैषेधिकी परीसह. वसति खमबचमी प्रमुख छतां तेस्थानननेविषे वास करतां, बेसतां, ऊठतां शीतोष्ण कालादिकनेविषे मनमां उद्वेग करवो नही ते अग्यारमुं सिज्जा के० सय्या परिसह. कोई अज्ञानी पुरुष क्रोधने वशथई तिरस्कार करे, तेने देखी पोते तेना उपर दृढ प्रहारनीपरे क्रोध करे नही ते बारमुं अक्कोस के० आक्रोस परिसह. कोई डुरात्माआवी साधुनो वधकरे तोपण तेना उपर स्कंधसूरिना शिष्यनीपरे रोष आणे नही ते तेरमुं वह के० वधपरिसह. भिक्षावृत्तिकाले कोईने प्रार्थना करतां न आपे अथवा आपतां संकोच करे तोपण पोते गृहस्थपणानी इच्छा करे नही

ते चोदमुं जायणा के० याचना परिसह. ॥२७॥

· अलाभ रोग तण फासा, मल स
क्कार परीसहा ॥ पन्ना अन्नाण स
म्मत्तं, इअ बावीस परीसहा ॥२८॥

अर्थः- गोचरी करवाने गया छतां अंतराय कर्मना उदयथी शुद्धआहार अथवा वस्त्रादिकना लाभना अभावे पण ढंढणकुमारनीपरे चित्तमां उद्वेग करवो नही ते पंदरमुं अलाभके० अलाभ परिसह. कोई महोटा रोगनी प्राप्ति थयाथी तेनी वेदना बहु थती होय तो पण आर्तध्यान न करवुं अथवा चिकित्सानी इछा करवी नही सनतकुमार राजऋषीनी परे सम्यक् प्रकारे सहन करवो ते शोलमुं रोगके० रोग परिसह. संथारामां शरीरनेविषे दाभ प्रमुखना तृण लागतां होय तो पण दुःख चिंतववुं नही. समाधिनो त्याग करवो नही. ते सत्तरमुं तणफासा के० तृण फरसपरीसह. शरीर उपर अतिशय मेल चढी जाय

तो पण स्नानादिकनी इछा करवी नही ते अडारमुं मलके० मल परीसह. कोइए वांद्याथी अथवा पूज्याथी अहंकार धारण करवो नही अने कोइये न वांद्याथी दिलगीर थवुं नही ते ओगणीसमुं सत्कार के० सत्कार पुरस्कार परीसह. पोतानी बुद्धि विशाल छतां तेनो गर्व करवो नही, सर्वनो विनय करवो; अथवा बुद्धि मंद छतां बीजो जे बुद्धिवान होय तेनो विशेष विनय करवो ते वीसमुं पन्ना के० प्रज्ञा परीसह. ज्ञानावरणी कर्मना उदयथी जणतां आवडतुं न होय तो पण जणवुं मूकवुं नही अने मनमां दुःख पण आणवुं नही परंतु कर्मनु विपाक एवोज छे एम चिंतववुं अथवा जणतां सारीरीते आवडतुं होय तोपण जे उन्मत्त थवुं नही ते एकवीशमुं अन्नाण के०अज्ञानपरिसह. अने सूक्ष्मविचार सांजली तेनेविषे अथवा देव गुरु धर्मनेविषे असद्दहणा करवी नही, परशासननी उन्नति तथा कष्टादिक देखीने मूढदृष्टि न थवुं ते बावीशमो सम्मत्तं

के० सम्यक्त्व परीसह. कहिये, इअके० ए प्रकारे बावीस के० बावीस परीसहा के० परिसह जाणवां परिसह शब्द सर्वत्र जोमवो. ॥ २८ ॥

दश प्रकारे यति धर्मनुं वर्णन करे छेः—

खंती मद्दव अज्जव, मुत्ती तव संज
मे अ बोधव्वे ॥ सच्चं सोअं आकिं,
चणंच बंभं च जइधम्मो ॥ २९ ॥

अर्थः— क्रोधनो जे अजाव ते पहेलो खंती के० क्षमाधर्म. माननो जे त्याग ते बीजो मद्दव के० मार्दवधर्म. मायानो जे त्याग ते त्रीजो अज्जव के० आर्यवधर्म. निर्लोजता ते चोथो मुत्ती के० मुक्तिधर्म. इच्छानो जे निरोध ते पांचमो तव के० तपधर्म. प्राणाति पातादिक पांचनुं जे विरमण तथा पांच इंद्रियोनो निग्रह चारकषायनो जय अने त्रण दंमनी निवृत्ति ए सतर जेदे छगो संजमे के० संयमधर्म. सत्य जाषण करवुं ते सातमो सच्चं के० सत्यधर्म. मन वचन अने

कायने शुद्ध राखवां, तथा चोरीनो त्याग करवो ते आठमो सोश्रं के० शौचधर्म. समस्त परिग्रह त्यागरूप मूर्छारहित थवुं ते नवमो आकिंचणं के० आकिंचन धर्म. औदारिक वैक्रिय संबंधी मैथुननो जे त्याग करवो ते दशमो बंभ के० ब्रह्मचर्य धर्म. एवी रीते जइधम्मो के० यतिनो धर्म बोधव्वे के० जाणवो. आ आर्यामां त्रण चकार छे ते पाद पूर्णार्थे उजयान्वयी अव्यय छे.॥२ए॥

हवे बार जावनानुं वर्णन करे छेः—

पढम मणिच्च मसरणं, संसारो एग
याय अस्सत्तं॥ असुइत्तं आसव सं,
वरोअ तह णिज्जरा नवमी॥ ३०॥

अर्थः— लक्ष्मी, यौवन, कुटुंब, परिवार, तथा आजरवा प्रमुखनेविषे जे अनित्यतानी जावना करवी ते पढमं के० प्रथम अणिच्चं के० अनित्य जावना. मरण आव्याना समये चक्रवर्त्ति, इंड, अथवा तीर्थंकर प्रमुख गमे तेवो मोटो पुरु

ष होय तेने धन कुटुंबादिक कोइनी शरण मल
ती नथी एवी जे नावना करवी ते बीजी असर
णं के० असरण नावना. आ जीवे संसारनेवि
षे सर्व नावनो अनुनव कर्यो ढे एवी जे नाव
ना करवी ते त्रीजी संसारो के० संसार नावना
आ जीव संसारमां एकलो आव्यो ढे, एकलो
जशे, अने एकलो सुख तथा दुःख नोगवशे.
कोइ साथी थवानो नथी एवी जे नावना करवी
ते चोथी एगया के० एकत्व नावना. आत्माज्ञा
न स्वरूपढे, अने शरीर जड ढे. माटे परस्पर
निन्न ढे. आत्मा ते शरीर नथी ने शरीर ते आ
त्मा नथी. आत्माथी शरीर अन्य ढे. तेमज ध
न तथा स्वजनादिक पण अन्य ढे. एवी जे ना
वना करवी ते पांचमी अन्नत्त के० अन्यत्व ना
वना. रस, रुधिर, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा,
वीर्य, परु, तथा आंतेडां प्रमुखे करी शरीर नरेलुं
ढे. अने जेना नव द्वारो सदा वेहेता रहे ढे, ए
शरीर कोइ काले पण पवित्र होतुं नथी एवी जे

नावना करवी ते बठी असुइत्तं के० अशुचि ना वना. मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय तथा योग ए पांच प्रकारना आश्रवे करीने कर्म बंधा य छे. अथवा दयादानादिके करी शुन कर्म बंधाय छे अने विषय कषायादिके करी अशुन कर्म बंधाय छे एवी जे नावना करवी ते सातमी आसवके० आश्रव नावना. जे जे संवरथकी जेजे आश्रव रोंकाय, ते ते आश्रवनुं, रोकवुं; अने ते ते संवरनुं; जे आदरवुं; एटले जेम क्षमादिकसंवर वडे क्रोधादिक आश्रव रोकाय छे इत्यादिक जे नावना करवी ते आठमी संवर के० संवर नावना तह के० तेमज पूर्वे संचेला कर्मनु साडवुं ते रूप निर्जरा सकाम अने अकाम ए बे नेदे छे एवी जे बार नेदना तपे करी उत्पन्न थाय छे ते नवमीणिज्जरा के० निर्जरा नावना. जाणवी. चकार पाद पूर्णार्थे उनयान्वयी अव्यय छे. ॥ ३० ॥

लोग सहावो बोही, डुलहा धम्म

रस साहगा अरिहा ॥ एआउ ना
वणाउँ, नावे अवा पयत्तेणं ॥३१॥

अर्थः– केड उपर बे हाथ दइने तथा बन्ने पग पसारीने उन्नेला पुरुषना जेवो जेनो आकार छे. षट ड्व्यात्मक छे पूर्व पर्याये विणसे. नवा पर्याये करीने उत्पन्न थाय. जे ड्व्यपणे निश्चल छे. एवी रीते उत्पत्ति, व्यय, तथा ध्रौव्य स्वरूप जे लोक छे. तेनुं नीचेनुं तलीउं ढालेला मल्लक जेवुं छे. मध्य नाग जालरसरिखुं छे अने उपरनो नाग मृदंग जेवो शाश्वत छे, इत्यादिक जे लोक स्वरूपनी नावना करवी ते दशमी लोगसहावो के० लोक स्वनाव नावना. जीवने यथा प्रवृत्तिए करी अकाम निर्जरावडे पुन्यना प्रयोगथी मनुष्यनव, आर्यदेश तथा धर्मश्रवणनी प्राप्तिथई छतां पण सम्यक्त्व प्राप्त थवुं अति डुर्लन छे एवी जे नावना करवी ते अग्यारमी बोही के० बोधिनावना. अने जे डुस्तर संसार समुड्मांथी

तारवाने प्रवहण समान ते श्रीजिनप्रणीत दशवि
ध क्षमादिक शुद्ध धर्मनो साहगा के० साह्यना
करनारा अरिहा के० अरिहंतादिक आ संसा
रनेविषे दुलहा के० दुर्लभ छे. एवो चिंतववुं
ते बारमी धम्मस्स के० धर्म भावना ए रीते स
म्यक्दृष्टिये पयत्तेणं के० प्रयत्ने करीने एआउ
के० ए कहेलीउ भावणाउ के० बार भावनाउ भावे
अवा के० प्रमादरहित थईने भाववीउ. ॥३१॥

पांच प्रकारना चारित्रनुं वर्णन करे छेः—

सामाइ अत्थ पढमं, छेउ वठावणं भ
वे बीअं ॥ परिहार विसुद्धीअं, सु
हमं तह संपरायं च ॥ ३२ ॥

अर्थः—तेउमां अत्थ के० ईहां पढमं के० पहे
लो चारित्र सामाई के० सामायक छे तेनो अर्थ
करे छे. सम अने आयक ए बे पदोनो एक सा
मायक शब्द थयो छे. समते ज्ञान, दर्शन, तथा
चारित्र तेनुं आयक ते लाभ ज्यां थाय छे. एटले

जेणेकरी ज्ञान दर्शन तथा चारित्र ए त्रणेनी प्रा
प्ति थाय तेने सर्व सावद्य योग त्यागरूप अने
निरवद्य योग सेवनरूप सामायक कहिये. ते
श्रावकने देशविरति सामायक अने साधुने सर्व
विरति सामायक तेना बे जेद ढे तेमां जरत अै
रावतादि दश क्षेत्रनेविषे पहेला तथा ढेला जि
नना वारामां दंमकनो उच्चार करावे ते इत्वरिक
ऊगामण कस्यांसुधी जे रहे ते इत्वरिक सामायक
कहिये अने वचला बावीश जिनोना वारामां त
था महाविदेह क्षेत्रमां यावत्कथिक एटले सामा
यक ऊयस्या पढी निरतिचारज पाले ढे तेथी
तेने ऊगामण नही होवाने लीधे यावत्कथिक
चारित्र कहिये एने सम्यक् चारित्र पण कहे ढे.

बीअं के० बीजो ढेउवठावणं के० ढेदोपस्था
पनीय चारित्र जवेके० ढे. ते पूर्व पर्यायनो ढेद क
रवो, अने नवा पर्यायोनुं स्थापन करवुं तथा पं
च महाव्रतनो उच्चार करावबो. ते पण बे जेदे
एक सातिचार ते मूलगुण घातिने प्रायश्चितरूप

बीजो निरति चार ते इत्वर सामायकवंत नवशि
ष्यने ढजीवणीया अध्ययन नण्या पढी तथा बी
जो तीर्थआश्रयी जेम श्री पार्श्वनाथना तीर्थथी
वर्द्धमान स्वामीना तीर्थे आवी पंच महाव्रत
रूपधर्म आदरे तेने होय.

हवे त्रीजो परिहारविसुद्धियं के० परिहार वि
शुद्धि चारित्रना पर्याय कहिये ढे. परिहार के०
तप विशेष तेणेकरी विशुद्धि ज्यां होय तेने प
रिहार विशुद्धिक चारित्र कहिये ते बे नेदेढे ते
मां पहेलो जे चारित्रना कल्पमां प्रवर्त्तता होय
तेनो चारित्र ते निरविशमानक परिहार विशुद्धि
क जाणवो अने बीजो पूर्वे जेने आचर्यो होय
तेने निरविष्टकायिक परिहार विशुद्धिक जाणवो ते
आवी रीतेः—नवजणानो गढजूदोनिकले तीर्थंकर
पासे अथवा जेने पासे पडिवज्यूं होय तेने पासे
चारित्र पडिवजे नव साधुमां चार परिहारक एटले
तपियाथाय अने चार तेना वेयावच्चना करनारा
थाय एकने वांचनाचार्य गुरुस्थानके ठेरावे परि

हार मास ब सुधि तप करे तेमां उष्णकाले ज
घन्यथी चोथ मध्यमथी बठ अने उत्कृष्टथी अठम
एवा अनुक्रमे तप करे. शीतकाले जघन्यथी बठ
मध्यमथी अठम उत्कृष्टथी दशमकरे. वर्षाकाले
जघन्यथी अठम मध्यमथी दशम उत्कृष्टथी डुवा
लस करे पारणे आंबील कल्पस्थितपणे नित्यक
रे एम बमहीना तपकरे ते पबीफरी चार तपस्या
ना करनार ते वैयावच्चीया थाय अने वैयावच्च
करनारा तपिया थाय तेपण ब मास लगे तप
करे ते पूरण थया पबी गुरु तप करे ते वारे
ते आठ माहेलो एक गुरु थाय शेष बीजा वै
यावच्चकरें एम १०८ महीनासुधि तप सं
पूर्ण करी पबी जिनकल्प आदरे अथवा गच्छमांप
ण आवे ए परिहारविशुद्धि चारित्रनो विचार कह्यो.

तह के० तेमजचोथो सुहुमके० सूक्ष्मबे संपराय
के० कषायजिहां तेने सूक्ष्म संपराय चारित्र क
हिये ते उपशम श्रेणीये कर्म उपशमावतां अ
थवा क्षपकश्रेणीये कर्म खपावतां नवमां गुण ग

ए जोजनना संख्याता खंम करीतेने उपशमीहोय
ते उपशमावे तथा क्षपक होयते खपावे ते संख्या
ता खंम माहेलो छेलो एक खंम तेना असंख्याता
सूक्ष्म खंम करे तेने दशमें गुंण ठाणे उपशमावे
अथवा क्षपक होय ते खपावे ते गुण ठाणानो
नामसूक्ष्म संपराय अने चारित्रनो नाम पणसूक्ष्म
संपराय जाणवो ते चारित्र बे नेदेछे एक श्रेणी
चमताने विशुद्धमान होय बीजी उपशम श्रेणी
थी पडताने संक्लिष्टमान जाणवो. ॥ ३२ ॥

तत्तो अ अहरकायं, खायं सव्वंमि जी
वलोगंमि ॥ जं चरिऊण सुविहि
आ, वच्चंति अयरामरं ठाणं ॥ ३३ ॥

अर्थः– तत्तोअ के० तेवारपछी पांचमो अह
स्कायंके० यथाख्यात चारित्र ते ज्यां कषायनो
उदय नहोय तेने कहियें तेना बे नेद छे एक छ
द्मस्थने तेमां उपशामकने इग्यारमे गुणठाणे हो
य अने क्षपकने बारमे गुणठाणे होय बीजो केव

लीने तेरमे अने चउदमे गुणठाणे होय ते सवंमि के० समस्त जीवलोगंमिके० जीव लोकनेविषे एम केवुं खायं के० प्रसिद्ध छे ते कहेछे जंके० जे प्रते चरिऊणके० आचरीने सुविहिआ के० सुविहित साधु ते अयरामरंठाणं के० अजरामर स्थानक प्रते वच्चंति के० पामे एटले जन्म जरा मरण रहित जे मोक्ष स्थानक ते प्रते पामे. ॥ ३३ ॥

इतिश्री संवर तत्व विचार समाप्तः

अथनिर्ज्जरा तत्वविचार प्रारभ्यते.

बारसविहं तवोणि, ज्जराय बंधो चऊ
विगप्पोअ ॥ पयइ ठिइ अणुभाग,
पएस भएहिं नायव्वो ॥ ३४ ॥

अर्थः– गाथाना पूर्वार्धमांना एक एक वाक्ये करी निर्जरा तत्वनुं वर्णन करे छेः– निर्जरा बे प्रकारे छे एक द्रव्यनिर्जरा, बीजी भावनिर्जरा. एने अकाम अने सकाम एवा भेदे पण निर्जरा

कहे छेः- जेणे करी आत्माना शुद्ध परिणाम थईने पोतानी मेळे कर्मोनी स्थितिनुं जे पाकवुं, एटले अविरति तथा तिर्यंचादिकनी पठे इच्छा विना कष्ट सहन करतां पुद्गल कर्मनुं जे क्षपन थाय छे तेने द्रव्यनिर्जरा अथवा अकाम निर्जरा कहिये ; अने बार प्रकारना तपेकरी संयमी रहीने कष्ट सहन कस्याथी जे कर्म परमाणुनुं क्षपन करवुं अथवा साडवुं तेने भावनिर्जरा अथवा सकामनिर्जरा कहिये. ए बन्ने निर्जरामां भाव अथवा सकामनिर्जरा श्रेष्ठ छे ते णिज्जराय के० (निर्जराय) निर्जरा तत्व बारसविहंके० (द्वादश विधं) बार प्रकारना तवो के० तपना भेदेकरी कह्यो छे. एटले बार प्रकारनो तप कस्याथी सर्व कर्मोनुं क्षपन थाय छे तेनेज सातमुं निर्जरातत्व कहेछे

हवे गाथाना पूर्वार्द्धमांना " बंधो " ए शब्दथी बंधतत्वनो आरंभ थाय छे बंधो के० (बंधः) बंधतत्व चउविगप्पो के० (चतुर्विकल्पः) चार भेदे छे. ते आ प्रमाणेः- पयइ के० (प्रकृतिः)

प्रकृतिबंध ते स्वनाव परिमाण रूपछे ठिई के० (स्थितिः) स्थितिबंध ते काल परिमाण रूप छे. अणुनाग के० (अनुनागः) अनुनागबंध ते रसरूपछे. अने पएस के० (प्रदेशः) प्रदेशबंध ते पुजल परिमाणरूप छे. एचार नेएहीके० (नेदैः) नेदेकरीने णायव्वो के० बंधतत्व जाणवो. ॥ ३४ ॥

बार प्रकारना तपवडे कर्मोनी निर्जरा थायछे तेने निर्जरातत्व कहेछे ते तपना बे नेदछे. एकबाह्य तप, ने बीजो अन्यंतरतप तेउमां प्रथम आ गाथाएकरी छ प्रकारना बाह्यतपनुंकथन करेछेः—

अणसण मूणोअरिआ, वित्ती संखेवणे रसच्चाउ॥ कायकिलेसो संलीण, याय बज्झो तवो होइ॥ ३५ ॥

अर्थः— पहेलो अणसण के० अनशन तप ते आहारनो त्याग करवो. तेना बेनेद छेः— एक इत्वर; ने बीजो यावत्कथिक. नोकारसी, छठ, अठमादिथी मांमीने छ मासी पर्यंत अनेक

विधिये जे नियमयुक्त अशननो त्याग करवो ते इत्वर अनशन कहियें. यावत्कथिक ते जावज्जीव अनशन ग्रहणरूप तेना बे भेद छेः— एक पादोपगम बीजो भत्तपच्चरकाण. ए बन्नेना वली नीहारिम अने अनिहारिम ए बबे भेद छे.

बीजो ऊणोअरिआ के० ऊणोदरीतप एटले न्यूनता करवी तेना बेभेदछे. एक द्रव्यथी; बीजो भावथी तेउमांना द्रव्यउणोदरीना बे भेद छे. एक उपकरणनी न्यूनता करवी. बीजो भात पाणीनी न्यूनता करवी. तथा बीजो भावथी ते क्रोधादिकनी न्यूनता करवी.

त्रीजो वित्तिसंखेवण के० वृत्तिसंक्षेप तप एटले अभिग्रह करवा. चऊदनियमधारवा तेना चार भेद छे. एक द्रव्यथी बीजो क्षेत्रथी त्रीजो कालथी, अने चोथो भावथी.

चोथो रसच्चाउ के० रसत्यागतप ते नीवी तथा आंबिल प्रमुखनुंकरवुं, अने विगयनोत्यागकरवो.

पांचमो कायकिलेसो के० कायक्लेशतप ते

लोचादिक कष्टनुं सहन करवुं, कायोत्सर्ग करवो तथा उत्कटिकादिक आसन करवुं.

छगो संलीणया के० संलीनतातप एटले गोपन करवुं. तेना चार भेद छे. पहेलो इंद्रिय संलीनता, बीजो कषाय संलीनता, त्रीजो योग संलीनता, अने चोथो विविक्त चर्या संलीनता, एटले एकांत वासे रहेवुं. ए चार प्रकार जाणवा.

एरीते जे कष्टने मिथ्यात्वीउ पण तप करी माने छे जेथी बाह्य शरीरने ताप थाय छे जेने लोक पण देखी शके छे, अने जेथी कष्ट घणुं ने लाभ अल्प थाय ते छ प्रकारनो बज्झो के० बाह्य तवो के० तप होई के० छे. ॥ ३५ ॥

छ प्रकारना अभ्यंतर तपनुं कथन करे छेः—

पायच्छित्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव
सज्झाउ ॥ झाणं उस्सग्गो विअ,
अप्भिंतरउ तवो होइ ॥ ३६ ॥

अर्थः— पहेलो पायच्छित्तं के० प्रायश्चित्ततप

एटले कीधेला अपराधनी शुद्धिकरवी. गुरुमुखे आलोवणा लेवी तेना दश भेद छे.

मात्र गुरुनी आगल करेला अपराधनुं कथन करवुं जेमके गोचरी प्रमुखनुं जे आलोववुं इत्यादिक ते पहेलो आलोचन प्रायश्चित्त. पूंज्या विना मातरुं प्रमुख परठेआथी मिछामि डुक्कड लेवुं ते बीजो प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त. शब्दादिक उपर रागादिक कर्याथी तेनुं आलोचन करवुं अने बीजुं मिछामिडुक्कड पण देवुं एटले बन्ने वाना करवां ते त्रीजो मिश्रप्रायश्चित. अशुद्धमान भात पाणी प्रमुखनो जे त्याग करवो ते चोथो विवेक प्रायश्चित्त. कुस्वप्नादिक दीगथी कायोत्सर्ग करवो ते पांचमो कायोत्सर्ग प्रायश्चित. पृथ्वीकाय प्रमुखनो संघट थयाथी नीवी प्रमुख जे छमासी पर्यंत तप करवो ते छगो तप प्रायश्चित. दीक्षापर्यायनी न्यूनताथाय छे ते अपराधनुं जे निवारण करवाने तप करवुं ते सातमो छेदप्रायश्चित. मूल गुण भंग थई गयाथी फरी जे महाव्रतलेवा ते आठमो मूल प्राय

श्चित. कोईनो घात थई गयोहोय तो सूत्रोक्त विधिए करी तप करवो, अने त्यार पछी फरी महाव्रतनो जे आरोप करवो ते नवमो अनवस्थाप्य प्रायश्चित. साध्वी अथवा राजानी राणी प्रमुख स्त्रीनेविषे संजोग थइ गयाथी बार वर्षसुधी क्रिया सहित लिंगादिक जेदे रहीत तीर्थ प्रजावना करी, फरी दीक्षा लइने जे गछमां आववुं ते दशमो. पारांचिक प्रायश्चित. ए दशप्रकारे प्रायश्चित तप कह्यो.

बीजो विणउ के० विनयतप एटले गुणवंतनी जक्ति करवी, तथा आशातना टालवी, इत्यादिक. एना सात जेद छे.

तेमां प्रथम ज्ञाननो विनय पांच जेदेछे. पांच प्रकारना ज्ञाननी बाह्यथीसेवा करवी ते पहेलो जक्ति विनय. पांचे ज्ञाननुं अंतरमां बहुमान करवो ते बीजो बहुमान विनय,पांचें ज्ञानें करी जाणेला पदार्थोनी सम्यक् प्रकारे जे अनुजवथी जावना करवी ते त्रीजो जावना विनय. पांचे ज्ञाननुं जे विधिएकरी ग्रहणकरवुं तेचोथो विधि ग्रहण विनय.अने पांचेज्ञा

ननो जे अभ्यास करवो ते पांचमोअभ्यास विनय.
बीजो दर्शननो विनय बे भेद छे. पहेलो सु
श्रूषा विनय एटले उचित क्रियानुं शाचववुं. बी
जो अनाशातना विनय एटले अनुचित क्रियाथी
निवृत्तवुं; अथवा आशातना करवी नही. एवी
रीते दर्शननो विनय बे प्रकारे छे. जे साधु अथ
वा साधर्मि पोताथी दर्शन गुणे करी अधिक हो
य तेनेविषे सुश्रूषा विनय करिये. ते सुश्रूषानुं
स्वरूप अनेक प्रकारे छे ते कहे छे. सत्कार ए
टले स्तवन तथा वंदनादिक; अभ्युत्थान एट
ले आसनथी उठवुं; सन्मान एटले वस्त्र तथा
पात्रादिके करी पूजा करवी. आसनपरिग्रह ए
टले अति आदरें करी आसन लावी आपीनेस्वा
मी आ आसन उपर बेशो एम मुखथी कहेवुं.
तेमज आसनानुं प्रदान एटले मात्र मुखथकी क
हेवुं एटलुंज नही पण ते प्रमाणे आसन देवुं.
कृतिकर्म एटले वंदना करवी. अंजली ग्रहण एट
ले हाथ जोडवां आवताने सांबेजवुं. तेमज बेठे

लाने (पर्युपासना) सेवा करवी; जनारानेबोलाव वुं. ए प्रकारे सुश्रूषा रूप पहेलो विनय थाय छे.
बीजा अनाशातना विनयना पिसतालीस नेदछे, ते कहे छेः—१ रूषनादिक चोवीस तीर्थंकर; तथा २ जिनप्ररूपित धर्म. ३ धर्माचार्य अथवा प्रव्रजा चार्य. ४ व्याख्यान करनार वाचक. ५ वय, पर्याय, तथा श्रुत, ए त्रण प्रकारना थविर; ६ कुल ते चांड्रादिक एक आचार्यनी संतति. ७ गण ते पोत पोतामां सापेक्ष कुलनो समुदाय कोटिकादिक. ८ संघ ते ज्ञानादिक गुण सहित साधु समुदाय अथवा गण समुदाय रूप तेनेविषे; ए सांनोगिक ते एक मंमलमां जे साथे व्यवहार होय ते; १० क्रियायां ते जे सरखी क्रियावाला होय ते; तेमज मतिज्ञानादिक पांच ज्ञान मेलवंता पंदर थया तेनेविषे आसातनानुं त्याग करवो. तेमज नक्ति सहीत बहु मान करवो; तथा छतागुण वरवणवीने कीर्त्ति दीपाववी. एवी रीते पनरने एत्रणे गुणता अनाशातना विनयना पस्तालीस नेद

थाय छे ए अनाशातना रूप बीजो विनय कह्यो.

त्रीजो चारित्रनो विनय पांच भेदे छे ते कहे छेः—सामायक प्रमुख पांच चारित्रोनी सद्दहणा करवी; तेमज कायायेकरी फरसवो; आदरवो, पालवो तेमज भव्यप्राणीनी आगल परुपणाकरवी.

त्रण प्रकारना योगनो विनय कहे छेः—आचार्यादिकोनुं सर्व कालनेविषे मन वचन तथा कायाए करी विनय करवो. एटले ४ मने करी माठुं चिंतववुं नही; ५ वचने करी माठुं बोलवुं नही; तथा ६ कायाए करी माठी प्रवृत्ति करवी नही. तेवी रीतेज मन वचन कायानी शुभ प्रवृत्ति उदारता करवी. ए त्रण भेलतां छ भेद थया.

सातमो लोकोपचार विनय सात भेदे छे ते कहे छेः—१ गुरु प्रमुख जे श्रेष्ट पुरुष होय तेउनी समीपे वशवुं; २ आराधवायोग्य पुरुषनी इछाए प्रवर्त्तवुं; ३ जे पोतानी ऊपर उपकार करे तेनी ऊपर पाछो प्रतिउपकार करवो एटले गुरुने जो विनयेकरी प्रसन्न करीस तो ते मने शास्त्रदान देशे

एवा अभिप्राये करी गुरुनेभात पाणी प्रमुख लावी देवुं; ४ तेमज ज्ञानादिक जे कार्य, तेनुं कारण भात पाणी प्रमुखनुं करवुं एटले देवुं; ५ तथा दुःखेकरी पीमायल जे ग्लानी तेनी औषधादिके करी गवेषणा करवी. ६ तेमज देश तथा कालनुं जाणवुं जे अवसरे जे उचित होय ते अवसरे ते करवुं. ७ वमीलो संबंधी सर्व कार्योने विषे अनुकूलपणुं एटले उत्साहपणु. एवी रीते लोकोपचार विनय सात प्रकारे छे. एम विनयना भेदे करी बीजो विनयतप जाणवो.

त्रीजो वेयावच्च के० (वैयावृत्य) एटले भात पाणी प्रमुख संपादन कस्याथी उपष्टंभ दैये ते दश भेदे छे· यथाः– “ आयरियउवज्झाए थेर तवस्सी गिलाण सेहाण; साहमी कुल गण संघ, वेयावच्चं हवइ दसहा ” (आचार्य) जेनी पाशेथी धर्म प्राप्त थाय छे ते; (उपाध्याय) जे विद्या अभ्यास करावे छे ते; (स्थविर) ज्ञान, पर्याय, तथा वय, ए त्रण प्रकारे. (तपस्वी)

अठम प्रमुख तप करनार होय ते; गिलाण के०
(ग्लान) जे रोगी होय ते; सेहाण के०) शिष्य
नवी दिक्षा लीधेलो होय ते; साहमी के०
समान धर्मवान होय ते; कुल के० चंद्रादिक कुल
वान होय ते, गणते कोटिक प्रमुख, संघ के० जे
समुदायरूप होय ते; एवीरीते ए दशनी अशन,
पान, वस्त्र, पात्र तथा औषध प्रमुखेकरी यथा
योग्य सेवा करवी तेने वैयावृत्त्य तप कहे छे.

तहेव के० (तथैव) तेमज चोथो सज्झाय
के० (स्वाध्याय) ए नामनो तप ते पांच भेदे छे.
यथा "वायणा पुछणाचेव, तहाय परिअट्टणा;
अणुप्पेहा धम्मकहा, सज्झाओ होइ पंचहा." वा
यणा के० (वाचना) ते पोते भणवुं शिष्यादिकने
भणाववुं तथा वांचवुं; (पृछना) जे सूत्रार्थमां
संदेह पडयार्थ। गुरवादिकने पूछवुं ते; तेवीरीतेज
परिअट्टणा के० (परिवर्त्तना) जे सीखेलो अर्थ
संभारवो ते; (अनुप्रेक्षा) धारेला अर्थनुं चिंत
न करवु ते (धर्मकथा) धर्मसंबंधी कथा कहे

वी अथवा धर्मोपदेश करवो ते; ए प्रकारे स्वा ध्यायतप पांच नेदे थाय ते ते कह्यो.

पांचमो झाणंके० (ध्यानं) मननुं जे एकाग्रताये अवलंबन ते ध्यान तप चार नेदे ले.

तेमां पहेलुं (आर्त्तध्यान) एना वली चार नेद ले:— भ्राता, मित्र, स्वजन, माता, पिता, सुहृद, नृत्य, तथा पशु प्रमुख जे पोताने इष्ट एटले अतिप्रिय होय तेओनो वियोग थयाथी जे चिंता, शोक, अथवा विलाप करवो ते पहेलुं इष्टवियोग आर्त्तध्यान. रासन कोटी प्रमुख अशुन विषयआधारनूत, तथा तदाश्रित विषयोनो संयोग थयाथी तेओनाविषे द्वेषेकरी जे वियोगनुं चिंतवन करवुं ते बीजुं अनिष्ट संयोग संप्रयुक्त आर्त्तध्यान. शरीरनेविषे कोइ रोगनी उत्पत्ति थयाथी तद्विषयक जे चिंतादिकनुं करवुं ते त्रीजुं रोगचिंता आर्त्तध्यान. अमुक समय आव्याथी हुं आ कार्य करीश इत्यादिक नविष्यकालविषे जे शोचना करवी, दान, शील तथा तप प्रमुख करीने

तेना फलनी जे इच्छा करवी, अथवा आ जवने विषे में आवा उग्र तप कर्या छे माटे आवता जवमां मने अमुक वस्तुनी प्राप्ति थजो एवो जे नियाणो बांधवो ते चोथुं अग्रशौच आर्त्तध्यान कहिये.

बीजुं (रौद्र) ए नामनुं ध्यान चार जेदछेः— द्वेषेकरी प्राणीने मारवानी अथवा बंधनादिक करवानी जे चिंतना करवी ते पहेलुं हिंसानुबंधी रौद्रध्यान. पैशून्यादिक असत्यजूत वचन बोलवाना जे अध्यवसाय ते बीजुं मृषानुबंधी रौद्रध्यान. क्रोध तथा लोजादिकने वश थइने बीजानुं द्रव्य हरण करवानी जे चिंतवना करवी ते त्रीजुं स्तेयानु बंधी रौद्रध्यान. शब्दादिक विषयनुं साधनजूत जे धन, तेनुं रक्षण करवाने अर्थें सर्व स्वसंबंधीओने विषेजे दुष्ट चिंतवन करवुं जेमके,जो आ सर्व जीवता हशेतो मारुं धन लइ लेशे माटे जो मरी जाय तो सारुं थाय एवी जे दुष्ट चिंतवना करवी ते चोथुं संरक्षणानु

बंधी रौद्रध्यान कहिये. ए आर्त्त अने रौद्र ए बे ध्यान संसार संबंधी फलना देनारा छे.

त्रीजुं धर्म ध्यानना चार भेद छेः— ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वैराग्य तथा भावना ए करी वीतरागना वचन उपर जे सद्दहाण एटले श्रद्धध्यान राखवुं, मनुष्यनी मति तुच्छ छे पण केवली भाषित सर्व सत्यज छे एवी जे चिंतवना करवी ते पहेलुं आज्ञाविचय धर्मध्यान. राग द्वेषादिक जे आश्रव छे ते ईहपर लोकनेविषे अनर्थरूप छे एवी जेचिंतवना करवी ते बीजुं अपायविचय धर्मध्यान. सुखदुःखादिक आवी प्राप्त थयाथी तेनो हर्ष शोक न करतां कर्मनुं फल जाणवुं ते त्रीजुं विपाकविचय धर्मध्यान; जिनोक्त षट् द्रव्यना लक्षण संस्थानादिकनी जे चिंतवना करवी ते चोथुं संस्थानविचय धर्मध्यान कहिये.

चोथा शुक्लध्यानना चार भेद छेः— प्रत्येक द्रव्यनेविषे उत्पादादि पर्यायना भेदपणानुं चिंतवन करवुं, शब्दथी शब्दांतरे अर्थथी अर्थांतरे सं

क्रमण करवुं, तथा एक योगथी बीजा यागनेवि षे एटले मनोयोगथी वचनयोगनेविषे, वचनयो गथी काययोगनेविषे संक्रमण करवुं इत्यादिक ते पहेलुं पृथक्त वितर्क सविचार शुक्लध्यान; ए ध्या न जांगिक श्रुतपाठीने त्रणे योग छतां थाय छे.

उत्पादादिक एक पर्यायेकरी निर्वातस्थानक दीपकनी पठे निष्प्रकंपचित्तवान थइने पूर्वेलाथी विपरीत रहेवुं ते बीजुं एकत्व पृथक्त्व सविचार शुक्लध्यान; ए ध्यान गमे ते एक योगथी थाय छे. ए बे ध्यान यद्यपि पूर्वगत श्रुतावलंबीने हो य छे तथापि मरुदेव्यादिकने श्रुतविना पण थ या हता ए विशेषता छे. तेरमां गुणठाणाने अंते मनोयोग तथा वचनयोग रुंध्या पछी काययोग रुंधता अनुवृत्तिते त्रीजुंसूक्ष्मक्रिया अनिर्वृत्तिनामे शुक्लध्यान, आध्यान काययोगेंज थायछे. शैलेशी गुणठाणे गये थके क्रिया विछेद थईने जे पाछुं पडवुं नही ते चोथुं व्युछिन्नक्रिया अप्रतिपातीशु क्लध्यान कहिये. एध्यान योगना अजावे थायछे

ध्यानपणुं पूर्वना प्रयोगवडे सिद्ध थाय छे. जेम दंमवडे चक्र फेरवीने ते दंम कहाडी लीधां पछी पण पूर्वना प्रयोगथी चक्र फरतुंज रहे छे, तेम जाणवा ए चार ध्यान कह्या पण अभ्यंतर तपमां मात्र धर्मध्यान अने शुक्लध्यान ए बे उप योगी छे केमके ए मुख्य के० मोक्षना कारणभूत छे.

छट्ठो उस्सग्गोविय के० कायोत्सर्ग तप द्रव्यथी तथा भावथी बेभेदे छे. तेमां द्रव्योत्सर्गना चार भेद छे ने भावोत्सर्गना त्रण भेद छे ते कहे छे.

गच्छत्यागी जिनकल्पादिक आदरे ते पहेलो गणोत्सर्ग; अणसणादिक व्रत लइने शरीरनो जे त्याग करवो ते बीजो देहोत्सर्ग; कल्पविशेषे उपधिनो जे त्याग करवो तेत्रीजो उपध्योत्सर्ग; अधिक तथा अशुद्धमान भातपाणीनो जेत्यागकरवोते चोथो. एचारप्रकारे द्रव्यथी उत्सर्ग जाणवा.

हवे भावोत्सर्गना त्रणभेद कहेछे क्रोधादिक चारनो जे त्याग करवो ते पहेलो कषायोत्सर्ग; संसार ते नरकादिकना भवना आउखाना का

रए मिथ्यात्वादिकनो जे त्याग ते बीजोजवोत्स गं; बंधना हेतु जे ज्ञानावरणीआदिक ज्ञानप्रत्य निकपणे जे कर्म तेनो जे त्याग तेने त्रीजो कर्म (उत्सर्ग) कहिये. एथी कर्मनी निर्जरा थायछे. एरीते ब प्रकारे अप्रिंतरोतवो के० अभ्यंतरतप होइ के० छे एने सम्यक्दृष्टी तपकरी माने एम ए बार प्रकारना तपे करी निर्झरातत्व कह्युं. ३६

इति श्री निर्झरातत्व विचार समाप्तः

पूर्वोक्त बंधतत्वना चार प्रकारनुं वर्णनकरे छेः—

पयइ सहावो वुत्तो, ठिइ काला व
हारणं ॥ अणुनागो रसो नेउ,
पएसो दल संचउ ॥ ३७ ॥

अर्थः— जेम सूंठ प्रमुख पदार्थ नाखीने मो दक कर्यो होय ते वायु रोगनुं हरण करे छे; जीरोप्रमुख टाढाशी वस्तु नाखीने मोदक कर्यो होय ते पित्तरोगनुं हरण करे छे; इत्यादिक जे

द्रव्यना संयोगे करी ते मोदक नीपनो होय ते द्रव्यना गुणानुसारे तेमोदक वात पित्त तथा कफादिक रोगनुं हरण करे छे ते तेनो स्वनाव जाणवो. तेम ज्ञानावरणीय कर्मनो ज्ञानअपहारक स्वनावछे, सामान्य उपयोगरूप दर्शननो नाश करवानो दर्शनावरणीय कर्मनो स्वनाव छे; अनंत सुखने टालवानो वेदनीय कर्मनो स्वनाव छे, सम्यक्त तथा चारित्रने टालवानो मोहनीय कर्मनो स्वनाव छे; अक्षय स्थितिने टालवानो आयु कर्मनो स्वनाव छे; शुद्ध अवगाहनाने टालवानो नाम कर्मनो स्वनाव छे; आत्माना अगुरु लघु गुणने टालवानो गोत्र कर्मनो स्वनाव छे; अने अनंत दान, अनंत लान्न, अनंत नोग, अनंत उपनोग, तथा अनंत वीर्यने टालवानो अंतराय कर्मनो स्वनाव छे. तेम इहां प्रथम पयइ सहावो वुत्तो के० प्रकृति बंध ते कर्मना स्वनावने कह्यो छे.

जेम ते मोदकनो पक्ष, मास, बे मास, त्रण मास, तथा चार मास सुधीरहेवानो कालमान होय तेने

स्थिति कहिये. तेम कोइक कर्म पण जघन्यथी अंत मुहूर्त्त स्थितिरहे अने उत्कृष्टताए सित्तेर कोडाकोडी सागर प्रमाण स्थिति रहे ते स्थितिनी वचमां जे कर्म जेटली रहेवानी स्थितियें बांध्युं होय ते कर्म तेटलो काल रहे तेने कालावहारणं के० कालनुं अवधारण एटले निश्चय करवा रूप ठिइके० स्थिति बंध कहिये.

ते मोदक कोई मीठो होय छे, कोई कडवो होय छे अने कोई तीखो होय छे तेमज कोईनो एक गणीऊं रस होय कोईकनो बे गणीऊं रस होय छे इत्यादि अनेक प्रकारे अल्प विशेषत्व होय छे तेम कोई कर्मनो शुभ तीव्र मंद विपाक होय छे अने कोई कर्मनो अशुभ तीव्र मंद विपाक होय छे. जेम सातावेदनियादिक कर्ममां कोईकनो शुभ रस अल्प होय अने कोईकनो शुभ रस घणो होय तेने अणुभागोरसोणेउ के०(अनुभागो रसोज्ञेयः) ए अनुभाग बंधते रस जाणवो.

ते मोदक कोइ अल्पदल परिमाणथी उत्पन्न

थएलो होय छे, कोइ बहुदलथी उत्पन्न थयो होय, अने कोइ बहुतर दलथी नीपनो होय एवी रीते मोदकनुं जे दल परिमाण तेने प्रदेश कहिये. तेम कोइ कर्मपुद्गलना दल थोडां होयछे, कोइनां वधारे होय छे, तेनो परिमाण ते दलसंचउ के० दलसंचयरूप पएसो के० प्रदेशबंध कहिये.

आठे कर्मोनो स्वभाव दृष्टांते करी देखाडे छे.

पड पडिहार सि मज्ज, हड चित्त कु
लाल भंडगारीणं॥ जह एएसिं भा
वा, कम्माण विज्जाण तह भावा॥३८॥

अर्थः— पहेलुं पड के० आंखना पाटा समान ज्ञानावरणी कर्मनो स्वभाव छे. जेना उदयथी उत्पातकी. विनयकी. कार्मणकी परिणामकी. ए चार प्रकारनी बुद्धि न उपजे ते मति ज्ञानावरणी कर्म, जेना उदयथी भणवुं गणवुं न आवे अथवा वांचवा तथा सांभलवा उपर रुचि उत्पन्न थाय नही ते श्रुत ज्ञानावरणी क

र्म. जेना उदयथी अवधिज्ञान न उपजे ते अव
धि ज्ञानावरणी कर्म. जेना उदयथी मनपर्यव
ज्ञान न उपजे ते मनपर्यव ज्ञानावरणी कर्म.
तिमज जेना उदयथी केवल ज्ञान न उपजे ते
केवल ज्ञानावरणी कर्म कहिये. ए ज्ञानावरणी
कर्म जीवनो अनंत ज्ञान गुणने रोकेछे. दर्शना
वरणी कर्म ते पडिहारके० पोलिया समान छे.
जेम कोईकजीव राजानुं दर्शन करवा वांछे पण
पोलिउ दर्शन करवा न आपे. तेम जीवनो सा
मान्यपणे सर्व वस्तु देखवानो स्वभाव छे पण दर्श
नावरणी कर्मना उदयथी न देखे. ते दर्शन चार
छे. चक्षु, अचक्षु, अवधि, अने केवल, तथा ए
कर्मना उदयथी पांच प्रकारनी निद्रा पण होय
तेनो विस्तार आगल कर्यो छे. ए नव प्रकारना
दर्शना वरणीए जीवनो अनंत दर्शन गुण रोक्यो
छे. त्रीजुं वेदनी कर्म ते असि के० मधुलिप्त खड्ग
नी धारानुं जे चाटवुं ते समान छे. ते खड्गधारा
ने चाटतां तो मिठास उपजे पण जेवारे जीभ

कषाय तेवारे असाता थाय. एम सातावेदनीयनो विपाक मध चाटवा सरिखो छे. अने असाता वेदनीयनो विपाक खड्ग धारा सरिखो छे. संसारमां साताते असाता मिश्रित जाणवी. ए बे प्रकारना वेदनीय कर्मनो स्वभाव जीवनो अव्याबाध गुण रोकवानो छे. चोथुं मोहनीय कर्म ते मद्य के० मदिराना छाक समान छे जेम मदिरा पीधे जीव विकल थाय. हित अहित कांई नजाणे तेम मोहनीयना उदयथी धर्माधर्म नजाणे ए कर्मनो जीवनो अनंत चारित्र गुण रोकवानो स्वभाव छे. पांचमुं आयुकर्म ते हड के० हेड समान छे. जेम हेडमां पडेलो प्राणी निकलवा वांछे. पण राजाना हुकुमविना निकली नसके तेम जीव अशुभ नरकादिकनो आउषो भोगवतो छतो निकलवा वांछे. पण आयु पूर्ण कीधा विना निकली नसके. ए कर्मनो जीवनो अविनाशी गुण रोक्यानो स्वभाव छे. छठो नाम कर्म ते चित्त के० चितारा समान छे जेम निपुण चित्रकार

सारा तथा नरसा काला धोला रंगना नाना मो टा अनेक प्रकारना रूप आलेखे तेम ए कर्मना उदयथी जीवपण चित्ररूप संसारमां देव तथा मनुष्यादिकना रूडा रूप अनेक प्रकारना करे. अ ने नरक तथा एकेंद्रियादिकना मागारूप पण अनेक प्रकारना करे. ए कर्मनुं जीवना अरूपीगु ण रोक्यानो स्वजाव ठे. सातमुं गोत्र कर्म ते कु लाल के० कुंजार समान ठे. जेम कुंजार घृता दिकनो घडो घडे. ते पूजनीक कहेवाय ने मद्या दिकनो घट बनावे. ते निंदनिक कहेवाय. तेम जीवपण ए कर्मना उदयथी उंच गोत्रें उपजेतो पूजनीक थाय. नीच गोत्रें उपजेतो निंदनिक थाय. ए कर्मनो जीवनो अगुरुलघु गुण रोक्या नो स्वजाव ठे. आठमुं अंतराय कर्म ते नंमगा रीणं के० नंमारी समान ठे. जेम राजा दानदेव रावे पण नंमारी विपरीत थको न आपे. तेम ए कर्मना उदयथी जीवदानादिक करी शके न ही. ए कर्मनो अनंत दान, अनंत लाज, अनंत

जोग, अनंत उपजोग. अनंत वीर्य, एवी अनंत शक्ति गुण रोक्यानो स्वजाव छे. जह के० जेम एएसिं के० ए आठ पडादिक वस्तुनो जावा के० स्वजाव छे. तेम कम्माणवि के० आठ कर्मनो प ण जाण के० समज. तह के० तिमज जावाके० स्वजाव. ए आठ कर्मनो स्वजाव कह्यो. ॥३७॥

ए आठ कर्मनी प्रत्येके प्रकृतिनी संख्या कहेछे.

इह नाण दंसणा वर, ण वेय मोहाउ
नाम गोआणि ॥ विग्घं च पण नव डु
अ, छवीस चउ ति सय डु पण विहं॥३ए॥

अर्थः- इह के० ए शास्त्रनेविषे. नाण के० ज्ञानावरणी. अने दंसणावरणके० दर्शनावरणी. वेयके० वेदनी. मोहके० मोहनी. आउके० आ यु नामके० नाम. गोआणिके० गोत्र. विग्घंके० अंतराय ए आठ कर्मनी चके० वलि उत्तर प्रकृ ति अनुक्रमे कहेछे तेमां ज्ञानावरणी कर्मनी पण के० पांच प्रकृति. दर्शनावरणी कर्मनी नव के०

नव प्रकृति. वेदनी कर्मनी डुके० बे प्रकृति. मोहनी कर्मनी अठवीस के० अठावीस प्रकृति. आयुकर्मनी चउ के० चार प्रकृति. नामकर्मनी तिसय के० एकसों त्रण प्रकृति. गोत्रकर्मनी दु के० बे प्रकृति अंतराय कर्मनी पणके० पांच प्रकृति. विहं के० ए विधिएं करीने. आठ कर्मना नाम अने प्रकृति जाणवी. ए प्रकृतिबंध कह्यो.

आठे कर्मोनो उत्कृष्ट स्थितिबंध कहे छे.

नाणेअदंसणेचे अ, वेअणिए चेव
अंतराएअ ॥ तीसं कोडाकोडी, अ
यराणं ठिइअ उक्कोसा ॥ ४० ॥
सत्तरि कोडाकोडी, मोहणिए वीस
नाम गोएसु ॥ तित्तीसं अयराइं,
आउ ठिइ बंध उक्कोसा ॥ ४१ ॥

अर्थः- नाणे के० ज्ञानावरणी. दंसणे के० दर्शनावरणी. वेअणिए के० वेदनीय.

चेव के० निश्चे अंतराए के० अंतराय. ए चार कर्मनी. तीसंकोडाकोडी के० त्रीसकोडाकोडी. अयराणंठिइ के० सागरोपमनी स्थिति. उक्कोसा के० उत्कृष्टि जाणवी. अने सत्तरी कोडाकोडी के० सीतेर कोडाकोडी सागरोपमनी. मोहणीए के० मोहनीय कर्मनी स्थिति जाणवी. अने वीस नामगोएसु के० वीस कोडाकोडी सागरोपमनी नामकर्म ने गोत्र कर्मनी स्थिति जाणवी. तथा तित्तीसंअयराइ के० तेत्रीस सागरोपमनी. आउ ठिइबंध के० आयुकर्मनी स्थितिनो बंध उक्कोसा के० उत्कृष्टो जाणवो. आ आर्यामां चकार पाद पूर्णार्थे उभयान्वयी अव्यय छे. ॥ ४० ॥ ४१ ॥

आठे कर्मोनो जघन्य स्थितिबंध कहेछेः—

बारस मुहुत्त जहन्ना, वेयणीए
अठ नाम गोएसु ॥ सेसाणंत
मुहुत्तं, एयं बंध ठिईमाणं ॥४२॥

अर्थः— बारस मुहुत्त जहन्ना के० बार मुहू

तेनी जघन्यस्थिति वेयणीए के० वेदनी कर्मनी जा णवी. अने अठ के० आठ मुहूर्तनी. नामगोए सु के० नामकर्म अने गोत्रकर्मनी जघन्यस्थिति जाणवी. सेसाणं के० सेष बाकी रह्या जे ज्ञाना वरणी, दर्शनावरणी, मोहनी, आयु, ने अंतराय ए पांचे कर्मनी अंतमुहुत्तं के० अंतरमुहूर्तनी जघ न्यस्थिति जाणवी. जघन्यशब्द सर्वत्र जोडवो एयं के० ए बंधठिई के० बंधनी स्थितिनुं माणं के० मान कह्यो. ॥ ४२ ॥

इति बंधतत्व विचार समाप्तः

हवे मोक्षतत्वना नव भेद कहेछेः—

संतपय परूवणया, दव्व पमाणं च
खित्त फुसणाय ॥ कालोअ अंतर
भाग, भावे अप्पा बहू चेव ॥४३॥

अर्थः— संतपयपरूवणया के० छतापदनी प रूपणा करवी ते पेहेलुं छतापदनी परुपणा द्वार.

दव्वपमाणं के० सिद्धना जीव द्रव्यनुं प्रमाण कर
वुं ते बीजो द्रव्यप्रमाण द्वार. चके० वलि. खि
त्त के० खेत्र तेसिद्धने आवगाहना खेत्र केटलुं
छे ते विचारवो ए त्रीजो क्षेत्र द्वार. फुसणाय
के० फरसना ते केटला आकाशप्रदेशने सिद्धना
जीव फरसे एम विचारवो ते चोथो स्पर्सना
द्वार. कालोए के० काल ते सिद्धने सादिअनंत
रूप कहेवुं ते पांचमुं कालनुं द्वार. अंतर के०
आंतरूं सिद्धना जीवनेविषे केवुं. ते छगे
अंतर द्वार. भाग के० भाग ते सिद्धना जीव
संसारी जीवोना केटलामें भागेछे. ते सातमुं
भाग द्वार. भावे के० भाव ते क्षायिकादिक पां
च भाव छे तेमां सिद्धना जीव किया भावे छे:
एमविचारवुं. ते आठमुं भाव द्वार. अप्पाबहू के०
अल्प बहुत्व जे सिद्धने कहेवुं ते नवमुं अल्पा
बहुत्व नामें द्वार. चेव के० निश्चे. ए नव द्वार
मोक्षतत्वना विचारवा. ॥ ४३ ॥

हवे ए नव नेदना अर्थ अनुक्रमे कहे छेः—

संतं सुद्ध पयत्ता ॥ विज्जंतं खकुसुमं
व न असंतं ॥ मुखत्ति पयं तसउ ॥
परूवणा मग्गणाईहिं ॥ ४४ ॥

अर्थः— मोक्षपद ते संतंके० छतुंछे सुद्धपयत्ता
के० सुद्धपद माटे एटले एक पदपणा माटे छतुंछे
केमके जगत्रमां जेटला एक पद वाची पदार्थछे
ते सर्व अवस्य छताछे. अने जे जे बे पदना पदा
र्थ छे ते ते पदार्थ छता पण छे. ने अछता पण छे
दृष्टांत . जेम खरशृंग अश्वशृंग वंध्यापुत्र ए बे
पदना नाम छे ते अछता छे तेमज गोशृंग, म
हिषशृंग, राजपुत्र, ए बे पदोना नामोछे ते छता
पण छे माटे विज्जंतं के० मोक्षपद ते विद्यमान
छे. पण खकुसुमंवके० आकाशना फुलनी परें
न असंतं के० अछतो. नथी एटले अविद्यमान
नथी. मुखत्तिपयं के० मोक्ष इतिपदं, ते मोक्षप
द तस्सउ के० तेनी परूवणा के० परुपणा. ते

मग्गणाईहिं के० गत्यादिक मार्गणा द्वारें करवी.

सत्पदादिकनी परूपणा परूपता प्रथम मूल चउद मार्गणा छे तेनी उत्तर बासठ मार्गणा था य छे तेना नाम कहे छे.

गइ इंदीए काए, जोए वेए कसाय नाणेय ॥ संजम दंसण लेसा, नव सम्मे सन्नि आहारे ॥ ४५ ॥

अर्थः– मनुष्य देवता, नारकी, ने तिर्यंच, ए रीते प्रथम गइ के० गतिमार्गणा चार प्रकारे छे. एकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री, चउरेंद्री, ने पंचेंद्री, एरीते बीजी इंदीए के० इंद्रियमार्गणा पांच प्रकारे छे. पृथ्वी, अप्प, तेज, वायु, वनस्पति, ने त्रस, एरीते त्रीजी काए के० कायमार्गणा छ प्रकारे छे. मन, वचन, ने काया, एरीते, चोथी जोए के० योगमार्गणा त्रण प्रकारे छे. पुरुष, स्त्री, ने नपुंसक, ए रीते पांचमी वेए के० वेदमार्गणा त्रण प्रकारेछे. क्रोध, मान, माया, ने लोभ, एरीते छठी कसाय

के० कषायमार्गणा चार प्रकारे छे. मति, श्रुत अवधि, मनपर्यव, ने केवल, ए पांच ज्ञान तथा मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान ने विभंगज्ञान, ए त्रण अज्ञान एरीते सातमी नाणे के० ज्ञान मार्गणा आठ प्रकारे छे. पांच चारित्रना नाम प्रथम संवर तत्वमां कह्याछे अने छगो देशविरति तथा सातमो अविरति एरीते आठमी संयम के० संयम मार्गणा सात प्रकारे छे चक्षु, अचक्षु, अवधि, ने केवल, एरीतें नवमी दंसण के० दर्शनमार्गणा चार प्रकारे छे कृष्ण, नील, कापोत, तेजो पद्म ने, शुक्ल, एरीते दसमी लेसा के० लेश्यामार्गणा छ प्रकारे छे. नवसिद्धि, ने अनवसिद्धि, एरीते इग्यारमी नवके० नवसिध्यादिमार्गणा बे प्रकारे छे. वेदक, क्षायिक, उपशम, सास्वादन, मिश्र, ने मिथ्यात्व, एरीते बारमी सम्मे के० सम्यक्त्वमार्गणा छ प्रकारे छे. संज्ञी, ने असंज्ञी एरीते तेरमी सन्नि के० संज्ञीमार्गणा बे प्रकारे छे. आहारी, ने अणाहारी, एरीतें चउदमी आहारे

के० आहारमार्गणा बे प्रकारे छे. एम सर्व मली मूल चउदमार्गणानी उत्तरमार्गणा बासठ थायछे

बासठ मार्गणा स्थानमांथी जेमार्गणाये अतीतकाले सिद्ध थया ते स्थानना नाम कहेछेः-

नरगइ पणिंदि तस भव, सन्नि अहक्खाय खइअ सम्मत्ते ॥ मुक्खोणाहार केवल, दंसण नाणे न सेसेसु ॥४६॥

अर्थः- पहेली गतिमार्गणा चारछे तेमांथी नरगइके० मनुष्यगतिमांथी मोक्षगयाछे पण शेष त्रण गतिमांथी कोइ मोक्ष गया नथी. बीजी इंद्रिय मार्गणा पांच छे तेमांथी पणिंदिके० पंचेंद्रिमांथी मोक्षगया शेषचारे इंद्रिमांथी मोक्षगयानथी. त्रीजी कायमार्गणा छ छे तेमां तसके० त्रसकायमांथी मोक्षगया शेष पांचेकायमांथी मोक्षगयानथी चोथी भवमार्गणा बे छे तेमांथी भवके० भवसिद्धिक मोक्षगया छे पण अभवसिद्धिकमांथी कोइ मोक्ष गया नथी पांचमी संज्ञीमार्गणा बे छे तेमांथी सन्निके०

संज्ञीमांथी मोक्षगया छे पण असंज्ञीमांथी कोइ मो
क्ष गया नथी. छठी चारित्र मार्गणा सातछे तेमांथी
अहरकायके० यथाख्यात चारित्रवाला मोक्षगया
छे शेष छ चारित्रवाला कोइ मोक्षगयानथी सात
मी सम्यक्त्व मार्गणा छ छे तेमांथी खइअके०
क्षायक सम्यक्त्ववंत मोक्षगया छे शेष पांचसम्य
क्त्ववंत मोक्षगया नथी. आठमी आहारमार्गणा
बे छे तेमां अणहारके० अणाहारी मोक्षगया छे
पण आहारी मोक्ष गया नथी. नवमी दर्शन मा
र्गणा चार छे तथा दसमी ज्ञानमार्गणा आठ छे
तेमांथी केवल दंसणनाणेके० केवलदर्शन अने के
वलज्ञान ए बे मार्गणा स्थानवाला मोक्षगयाछे
शेष त्रण दर्शनवाला तथा सात ज्ञानवाला मो
क्षगया नथी. अने सेसेसुके० शेष रहेली जे क
षायमार्गणा, वेदमार्गणा, योगमार्गणा, अने ले
श्यामार्गणा, ए चारमार्गणानेविषे वर्त्तनारा जीवो
नके० मोक्षने पाम्यानथी ए सत्पद द्वार कह्यो.॥

हवे बीजुं द्रव्यप्रमाण द्वार कहेछेः—

दव्वपमाणे सिद्धा,णं जीव दव्वाणि
हुंति णंताणि ॥ लोगस्स असंखि
ज्जे, भागे इक्कोय सव्वेवि ॥ ४७ ॥

अर्थः— दव्वपमाणे के० द्रव्य प्रमाण द्वारने विषे विचारतां सिद्धाणं के० सिद्धना जीवदव्वाणि के० जीवद्रव्य. हुंति के० छे. अणंताणि के० अनंता एटले सिद्धना जीवद्रव्य अनंता छे. ए बीजुं द्वार कह्यो. हवे त्रीजुं क्षेत्र द्वार कहेछेः— लोगस्स असंखिज्जेभागे के० चउदराज लोकने असंख्यातमे भागें इक्कोयसव्वेवि के० एक सिद्ध पण त्यां रेहे छे. ने सर्व सिद्ध पण त्यां रहेछे. परंतु एक सिद्ध व्यास क्षेत्रापेक्षाये सर्व सिद्ध व्यास क्षेत्रनुं प्रमाण अधिक जाणवो. पण ते क्षेत्रमान सर्व लोकने असंख्यात मे भागे जाणवुं. केमके उत्कृष्टि अवगाहना वालानुं एक गाउनो छगे भाग शरीरहोय तेपण लोकनो असंख्यातमोभाग थयो.

अने लघु अवगाहना वालानो पण असंख्यात मो जाग थयो. अने सर्व सिद्ध पण पसतालीस लाख योजनमां रहेछे. ते पण लोकनो असंख्या तमो जाग थयो. ए त्रीजुं द्वार कह्युं. ॥ ४७ ॥

हवे स्पर्शनादि त्रण द्वार कहेछे:—

फुसणा अहिआ कालो, इग सिद्ध पडुच्च साइअणंतो ॥ पडिवाया जा वाउ, सिद्धाणं अंतरं नहि ॥ ४८ ॥

अर्थः— फुसणाअहिआ के० क्षेत्रथकी स्पर्शना अधिकछे. केमके जेटला खेत्रमां सिद्धजगवान रह्या छे तेने चारेबाजुयें बीजा सर्व दिशिउना आकाश प्रदेश स्पर्श्याछे. जेम एक आकाश प्रदेशे रह्यो जे पुजल परमाणु, तेने सात आकाश प्रदेशनी स्पर्शना होय छे माटे स्पर्शना अधिक जाणवी. ए चोथो स्पर्शना द्वार कह्यो. हवे पांचमुं काल द्वार कहे छे. कालो के० काल ते सिद्धना जीवने केटलो होय. इगसिद्धपडुच्च के० एक

सिद्ध प्रतित्य एटले आश्रित्य साइअणंतो के० सादि अनंतो काल होय. एटले जे समये मोक्षे गया तेवारें आदिथई अने फरीत्यांथी चववूं नथी माटे अनंत छे. तेमज सर्व सिद्ध आश्रित्य अनादि अनंत काल जाणवो. ए काल द्वार कह्यो. हवे छठुं अंतर द्वार कहेछे, ज्यां सिद्ध पणानोभाव प्राप्त थयो त्यांथी पडिवायाभावाओ के० पडवानो अभावछे. माटे सिद्धाणं के० सिद्धना जीवोने अंतरं नत्थी के० अंतर नथी. केमके सिद्धपणाथकी चवीने बीजो भवकरी फिरी सिद्धपणु पामवुं नथी. माटे अंतर नथी ए अंतर द्वार कह्यो.४८ सातमो भाग द्वार तथा आठमो भाव द्वारकहेछे.

सव्व जियाण मणंते, भागे तेतेसि
दंसणं नाणं॥ खइए भावे परिणा,
मि एअ पुण होइ जीवत्तं ॥ ४९॥

अर्थः– सव्वजियाणमणंते भागे के० सर्व संसारी जीवोने अनंतमे भागें सिद्धना जीवछे, के

मके त्रण कालमां जेकाले ज्ञानीने पूछियें त्यारें एम कहे जे एक निगोदनो अनंतमो जाग मोक्षे गयो छे. ए सातमो जागद्वार कह्यो. हवे आठमुं जाव द्वार कहेछे. तेतेसिके० ते सिद्धना जीवोने दंसणंके० केवल दर्शन. अने नाणंके० केवल ज्ञान ते खइएजावेके० क्षायक जावे वर्त्तेछे. अने परिणा मिके० परिणामिक जावें. एअके० ए. पुणके० व ली होइके० होए. जीवत्तंके० जीवितव्यपणुं. एटले सिद्धना जीवने बे जाव वर्त्तेछे. एक ज्ञान दर्शन क्षायक जावें वर्त्तेछे ने जीवितव्य पणुं ते परि णामिक जावें वर्त्तेछे. ए जाव द्वारकह्यो. ॥४ए॥

हवे नवमुं अल्पबहुत्वद्वार कहेछे.—

थोवा नपुंस सिद्धा, थी नर सिद्धा
कमेण संखगुणा ॥ इअ मुक्ख तत्त
मेअं, नव तत्ता लेसओ जणिआ ॥५०॥

अर्थः— थोवानपुंस सिद्धा के० सर्वथकी थो मा नपुंसक मोक्षे गया. केमके जन्म नपुंसक

नेतो चारित्र प्राप्त न थाय तेथी ते मोक्षेपण न जांय. अने जे पाछलथी कृत्रिम नपुंसक थया होय ते उत्कृष्टा एक समयमां दस मोक्षे जाय. माटे सर्वथी थोडा कह्या. ते नपुंसकथकी थीके० स्त्री, नर के० पुरुष. सिद्धा के० मोक्ष गया ते कमेण के० अनुक्रमे. संखगुणा के० संख्यात गुणा जाणवा. एटले नपुंसकथी स्त्री संख्यात गुणी उत्कृष्टी एक समयमां वीस मोक्षे जाय छे, अने ते स्त्रीथकी वली पुरुष संख्यात गुणा उत्कृष्टा एक समयमां एकसोने आठ मोक्षे जायछे, ए अल्पबहुत्व द्वार कह्युं. इअ के० ए नवमो मुक्ख तत्त के० मोक्षतत्व कह्यो एरीते मेंअं के० ए नवतत्ता के० जीवादिक नवतत्व. ते लेसउ के० लेशमात्र संक्षेपेकरी, भणिआ के० कह्या. ॥५०॥

हवे नवतत्व जाणवानो फल कहेछेः—

जीवाइ नव पयछे, जो जाणइ.त

स्स होइ सम्मत्तं॥जावेण सद्दहंतो,
अयाण माणेवि सम्मत्तं ॥ ५१ ॥

अर्थः— ए जीवाइ के० जीवादिक जे नवपय छे के० नव पदार्थ छे तेने जो के० जे प्राणी जाणइ के० जाणे तस के० ते प्राणीने सम्मत्तं के० सम्यक्त्व होइ के० होय अने जे तमेवसच्चं निशंकं जंजिणेहिं पवेईयं इत्यादि शुनआत्मपरिणामरूप जावेण के० जावेकरी ए जीवादिक नव पदार्थनेविषे जे सद्दहंतो के० सद्दहणा राखे तो ते अयाणमाणेवि के० जीवादिक नवपदार्थना ज्ञा नथी अजाण एटले रहित होय तो पण तेने सम्मत्तं के० सम्यक्त्व छे एम जाणवो ॥ ५१ ॥

हवे ते सम्यक्त्वनुं स्वरूप कहेछेः—

सव्वाइ जिणेसर जा,सिआइं वय
णाइ नन्नहा हुंति ॥ इह बुद्धी जस्स
मणे, सम्मत्तं निच्चलं तस्स ॥५२॥

अर्थः- सव्वाइजिणेसर नासिआइं के० सर्वे तीर्थंकर देवें नाष्या जे वयणाइ के० वचन ते नन्नहाहुंति के० अन्यथा नहोए. इहबुद्धीजस्स मणे के० एवी बुद्धी जेना मननेविषे होय तस्स के० तेने सम्मत्तंनिच्चलं के० सम्यक्त्व निश्चल छे एम जाणवो. ॥ ५२ ॥

हवे सम्यक्त्व पाम्यानुं फल कहेछेः-

अंतो मुहुत्त मित्तं,पि फासिअं हु
ज्ज जे हि सम्मत्तं ॥ तेसिं अवड्ढ पु
ग्गल, परिअट्टो चेव संसारो ॥५३॥

अर्थः- अंतोमुहुत्तमित्तंपि के० एक अंतर मुहुर्त मात्र पण फासिअंहुज्जजेहि सम्मत्तं के० फरस्यूं होय जेणे समकेत तेसिं के० ते जीवोने अवड्ढपुग्गलपरिअट्टो के० अर्द्धपुजल परावर्त्त चेव के० निश्चयें संसारो के० संसार बाकी जाणवो. पण ते प्रचूर आशातनावंत आश्री जाणवो अने शुद्ध सम्यक्त्व आराधनारतो कोईक तेहीज

जवे कोईक त्रीजे जवे कोईक सातमे जवे कोई आठमेजवे एम तुरतज सिद्धपणाने पामे. ॥५३॥

हवे ते पुजल परावर्त्तनो मान कहेछे.

उस्सप्पिणी अणंता, पुग्गल परि

अट्टउ मुणेअव्वो ॥ तेणंता तीअद्धा,

अणागयद्धा अणंत गुणा ॥ ५४ ॥

अर्थः— उस्सप्पिणिअणंताके० अनंती उत्सर्पिणीने अनंती अवसर्पिणी जाय तेवारे पुग्गलपरिअट्टउ के० एक पुजल परावर्त थाय. ते मुणेअव्वो के० जाणवो. तेणंता के० तेवा अनंता पुजल परावर्त्त अती अद्धा के० अतीत काळें गया. अने तेथी पण अनंतगुणा के० अनंत गुणा पुजल परावर्त्त अणागयद्धा के० अनागत काळें जासे ए पुजल परावर्त्तनो मान कह्यो. ॥ ५४ ॥

हवे सिद्ध जीवोना पन्नर जेद कहेछेः—

जिण अजिण तित्थतित्था, गिहि अन्न

सलिंग थी नर नपुंसा ॥ पत्तेअ सयं
बुद्धा, बुद्धबोहि कसिद्ध णिकाय ॥५५॥

अर्थः— पहेलो जे तीर्थंकर थई मोक्षेगया ते जिण के० जिणसिद्ध, जाणवा. बीजो जे सामान्य केवली थई मोक्षेगया ते अजिण के० अजिण सिद्ध जाणवा. त्रीजा तिर्थंकरने केवलज्ञान उपना पछी जे मोक्षेगया ते तिच्छ के० तीर्थसिद्ध जाणवा. चोथा तीर्थंकरने केवलज्ञान उपना पेहेलां जे जे मोक्ष गया ते अतिच्छ के० अतीर्थ सिद्ध जाणवा. पांचमां जे गृहस्थना वेषे रह्या थकां मोक्ष गया ते गिहि के० गृहस्थ लिंग सिद्ध जाणवा. छठा योगी सन्यासी प्रमुख तापसना वेसें जे मोक्षे गयाते अन्न के० अन्यलिंग सिद्ध जाणवा. सातमां जे साधुना वेषें मोक्षे गयाते सलिंग के० स्वलिंग सिद्ध जाणवा. आठमां स्त्री वेदपणु पामीने मोक्षे गयां ते थी के० स्त्रीलिंगें सिद्ध जाणवा नवमां जे पुरुषवेद पणु पामिने मोक्ष गयाते नर

के० पुरुषलिंग सिद्ध जाणवा. दसमां जे कृत्रि
म नपुंसक वेदपणु पामीने मोक्षे गया ते नपुंसा
के० नपुंसकलिंग सिद्ध जाणवा. इग्यारमां कोई
पदार्थ देखीने मोक्षे गया ते पत्तेअ के० प्रत्येक
बुद्ध सिद्ध जाणवा. बारमां जे गुरूना उपदेश
विना पोतानी मेले प्रतिबोध पामीने मोक्षे
गयाछे ते सयंबुद्ध के० स्वयंबुद्धसिद्ध जाणवा. ते
रमां गुरुनो उपदेश सांजली वैराग्य पामी मोक्षे
गया ते बुद्धबोहि के० बुद्धबोधित सिद्ध जाणवा.
चउदमो जे एक समयमां एक मोक्षे गयो ते इकसि
द्ध के० एक सिद्ध जाणवो. पंदरमां जे एक समय
मां घणा जीव मोक्षे जायते णिक्काय के० अनेक
सिद्ध जाणवा. ए पन्नर नेद सिद्धना कह्या.॥५५॥

हवे एना उदाहरण कहे छेः—

जिणसिद्धा अरिहंता, अजिणसिद्धाय
पुंमरिआपमुहा ॥ गणहारि तिछसि
द्धा, अतिछसिद्धाय मरुदेवी ॥५६॥

अर्थः— जिणसिद्धा के० जिनसिद्धते रुष नादिक अरिहंता के० अरिहंत नगवान् पोते जाणवा. अने अजिणसिद्धाय के० अजिणसिद्ध ते पुंमरिआपमुहा के० पुंमरीकगणधर प्रमुख जाणवा. तीर्थंकरने केवलज्ञान उपना केडे चतुर्विध संघनी स्थापना कस्या पबी जे सामान्य केवली थईने मोक्षे गया ते. गणहारी के० गणधर प्रमुख तेने तिब्बसिद्धा के० तीर्थसिद्ध जाणवा. अने अतिब्बसिद्धा के० अतीर्थ सिद्ध ते तीर्थ प्रवर्त्ताव्या पहेला जे सिद्ध थया ते मरुदेवी के० मरुदेवी माता प्रमुख जाणवा. ॥ ५६ ॥

गिहिलिंग सिद्ध नरहो, वल्कल चीरीय अन्न लिंगम्मि ॥ साहू सलिंग सिद्धा, थीसिद्धा चंदणापमुहा ॥ ५७॥

अर्थः— गिहिलिंगसिद्ध के० गृहस्थलिंग सिद्ध थया ते नरहो के० नरत चक्रवर्ती प्रमुख जाणवा. वल्कलचीरीय के० वल्कलचिरीय आदें

देईने जे तापसना वेसे सिद्ध थयाते अन्न लिंग म्मि के० अन्यलिंगेंसिद्ध जाणवा. साहू के० साधूनेवेषे जे सिद्ध थया तेने सलिंग सिद्धा के० स्वलिंगसिद्ध जाणवा. जे थीसिद्धा के० स्त्री लिंगे सिद्ध थया ते चंदणा पमुहा के० चंदन बाला प्रमुख जाणवी. ॥ ५७ ॥

पुं सिद्धा गोयमाई, गांगेयपमुह
नपुंसया सिद्धा ॥ पत्तेय सयंबुद्धा
भणिया करकंडु कविलाई ॥ ५८ ॥

अर्थः– पुंसिद्धा के० जे पुरुष लिंगे सिद्ध थया ते गोयमाई के० गौतमादिक जाणवा. अने गांगेयपमुह के० गांगेयप्रमुख जे कृत्रिम नपुंसक थईने सिद्ध थया ते नपुंसयासिद्धा के० नपुंसक लिंगें सिद्ध जाणवा. पत्तेय के० प्रत्येक बुद्ध सिद्ध ते भणिया के० कह्या छे करकंडू के० करकंडू राजा आदे देईने जाणवा. तथा सयंबुद्धा

के० स्वयंबुद्ध सिद्ध जे थया ते कविलाई के० कपिल आददेईने जाणीलेवा. ॥ ५८ ॥

तह बुद्धबोहि गुरुबोहिया एग स
मए एग सिद्धाय ॥ इग समए वि
अणेगा, सिद्धा ते णेगसिद्धाय ॥५९॥

अर्थः– तह के० तेमज बुद्धबोहि के० बुद्ध बोधित सिद्ध ते गुरुबोहिया के० गुरुना उपदेश थी बोध पामीने जे मोक्षगयाते जाणवा. अने एगसमय के० एक समयनेविषे महावीर स्वामी नीपरें जे एकज मोक्षे जाय तेने एगसिद्धा के० एक सिद्ध कहियें, इगसमएविअणेगा के० एक समयमां जे अनेक सिद्धा के० सिद्ध थया ते ऋषभदेव स्वामीनीपरें एकसो आठ मोक्षे जाय तेने णेग सिद्धाय के० अनेक सिद्ध कहिये. इति श्री मोक्षतत्व विचार समाप्तः

इति श्री नवतत्व प्रकरण बाला
व बोध सहित समाप्त.

॥ अथ सज्जनाष्टकप्रारंभ ॥

गर्वातीतवचो विलासनिपुणः प्रोत्फुल्लवक्त्रेक्षणः कारुण्यांकितकर्मनिर्मलमति व्यासप्रयासाश्रितः ॥ लोकापायनिकायनाशनिरतः सच्चक्रहर्षप्रदः पुण्यांकूरघनः कृपाकृतधनस्त्वीदृग्जनः सज्जनः ॥ १ ॥ आर्याऽजर्यधरः खलार्दनपरः संवित्रिविद्याकरः स्वात्मोत्कर्षवचः प्रकर्षविकथावाच्यस्वरूपोज्झितः॥ प्राणित्राणपरायणः परगुणग्राहैकहृग्नूमणिः पुण्यां० ॥ २ ॥ सत्याचारविचारसारचतुरः सल्लक्षणालंकृतः सर्वाशापरिपूर्तिपूज्यविनयानम्रीजवत्कंधरः ॥ पापव्याजकथाप्रथाप्रमथनः सत्पात्रविश्राणनः पुण्यां०॥३॥ धर्मध्यानविधानसाधनचणः सत्वार्तिनिस्तर्हणः संधानिर्वहणावदातधिषणासत्कर्ममर्मक्षमः ॥ दुर्बुद्धिप्रथमानवाक्यरचनामूकः सद्भूकस्वनः पुण्यां० ॥ ४ ॥ मिथ्यामूढमनोविकारविरतः शिष्टक्रियासंमतः स्तैन्यापानविगानमानविकलः सन्मार्गसंपत्फलः॥ प्रेमार्द्रप्रकृति

प्रजावप्टथिवी प्राणिप्रमोदास्पदं पुण्या० ॥ ५ ॥
शास्त्रार्थप्रतिपादकोक्तिघटनाविश्वत्रयीवज्जनः प
ण्यान्यप्रमदाङ्गरोदर मृगव्यक्रव्यजनक्मारतः ॥ दी
नोद्धारधुरंधरः स्वगुणवाक् प्रख्यापनव्रीडितः पु
ण्यां० ॥ ६ ॥ द्युम्नप्राप्तिजनार्तिघातनपटुः काम
क्रियानिस्पृहः सद्विद्याप्रथितः सुसंगतिरतः सुव्या
पृतिव्यापृतः मेदिन्यामुपकारकारणजनोधूमप्रका
शाशयः पुण्यां० ॥ ७ ॥ दृष्ट्वापीडितमामयेन मन
साशोकान्वितप्तः स्वयं ह द्याकायशुचित्वविस्तृतय
शः पूरप्रतिष्टार्जुनः ॥ आपत्प्रक्रमहीनदीनवचनो
त्सृष्टः प्रवीणप्रियः पुण्यां० ॥ ८ ॥ इत्येतत्सुज
नाष्टकं प्रकटितं शिक्षाप्रदानक्रमं सद्वंशोद्भनृणां
बुधेनचरमाकह्नोलसंज्ञेनतत् ॥ येन स्वीक्रियते
हिताय सततं श्लाघापदं प्राप्यते विश्वे सप्तकु
लावधिश्रुतिसुखं तेन प्रशस्यात्मना ॥ ९ ॥

॥ इति सज्जनाष्टकं समाप्तम् ॥